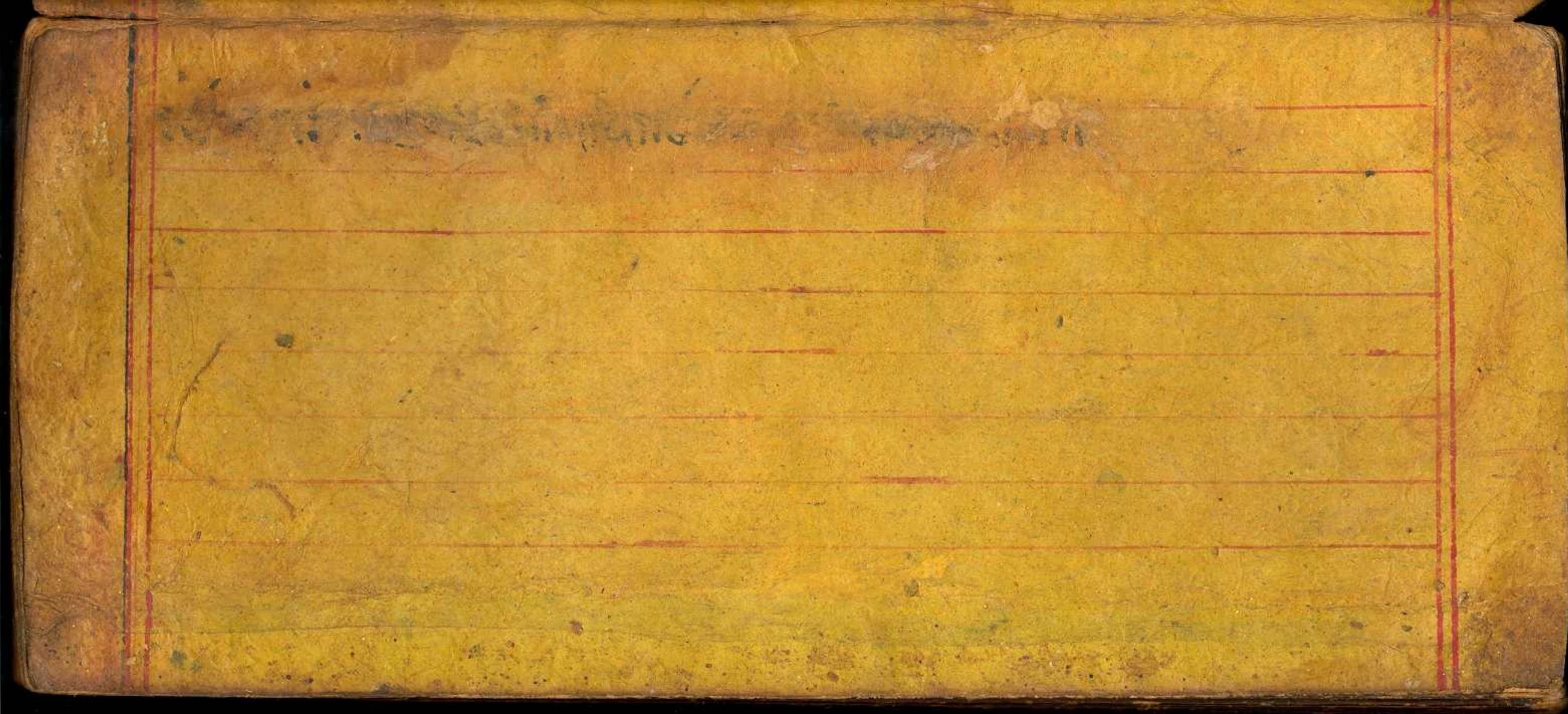








१ॐ नमः शिवाय कमावाञ्छादनीसगुनूमाहमश्नु आसाहायनभानमः ॥

१ॐ नमः शिवाय कमावाञ्छादनीसगुनूमाहमश्नु आसाहायनभानमः ॥ १ॐ नमः शिवाय कमावाञ्छादनीसगुनूमाहमश्नु आसाहायनभानमः ॥

क्रियासंग्रहपूजकमाह ॥ ॥ अथ कुरु क्रियाविधिमाह ॥ ॥ कृपापीतासनमा

तकीवायः विधित्यमातकीदेवताथपनायाय ॥ ॥ कृपासूर्यार्घ्य ॥ गुनू

पादार्घ्य ॥ पूजासंकल्पयावक ॥ नृणादिमाहावाक्छादि ॥ नृणादि ॥ दानप

तिछादि ॥ स्नानकिंवलसवक्रादाकायवाक्छादि ॥ नमस्तु वज्रवाकदाकिंछादि ॥

ज्ञापः सूर्यसूक्ष्मः शुकर्षनः धूप ॥ गुनूमनुसदान ॥ पक्वगव्यशधनः पक्वग

वकाथनीविय॥सिंधूनपूजाःउद्यातात्यादि॥ऊऊमानधर्तदानक॥ ॥
समाधियाया॥ ॥ननीकलभभन॥विक्रकलसःसुवनःगद्यःमहाका
लःरममात्राःवालकमात्रिःवैश्वाननपूजा॥जापःसुहासुधःआकर्षनःधूप॥
कलसभःसुखलखनय॥ध्यानप्राप्तप्रा॥उं वजीमृगादकथहं॥नफे२महागफे
खाहा॥मन्त्राकिनीऊलनूपविहावा॥फटिनिर्वकात्रऊपत्रिनगंनानात्रलमय
कलसभमाकात्रऊशुक्रधर्मादयाकनहंविहावा॥नदनूह्यह्यदेवताःवीरुवि
क्रापत्रिनामःसुखदेवताविचिंत्यःसुद्विऊमयूरुंकुशेहानसुखमानिय

पूजना दृष्ट्या पाशावमनादिकं कृत्वा दद्यात् ॥ गच्छ भयसहस्रप्रथं भयमहात्मा ॥
गद्यवितरयवाधितिलकं नूपा नृगनचिर्क ॥ विंक्ष्वसमयदवगाहानदवगा
धकी रगाचिंनयं नू ॥ ॐ सर्वगतगतमहायागभ्रिहं ॥ धमन ॥ ॐ वज्रक
कहं ॥ धमन ॥ ॥ निलाग्रन ॥ ॐ श्रीशिवमनंमृगिच्छस्वाहा ॥ हाजावाजा
महा ॥ ॥ ॐ श्रीशिवमनंमृगिच्छस्वाहा ॥ हाजावाजा
पकांमहा ॥ ॥ ॐ श्रीशिवमनंमृगिच्छस्वाहा ॥ हाजावाजा
दधिगु ॥ ॥ ॐ श्रीशिवमनंमृगिच्छस्वाहा ॥ हाजावाजा

वत्रं हं रुद्रं ॥ आ नमि मर्गा गतं ॥

हार्निकं नू हं रुद्रं ॥ स्वर्ग गतं ॥

आद्यादि ५ ॥

॥ पा ना र्जः आ व मनः अर्घः प्रा क्त न ॥

॥ सि न्न नः क्त

मकाः स्वानः सक्तः मगाः भलाः दक्षि त कि न य ॥

॥ पू ष्य आ भा ॥

ॐ आ र्थ वे ला व ना य स्वा दा ॥ ॐ अ क्षा या य स्वा दा ॥ ॐ न त्त स म् वा य स्वा दा ॥ ॐ

नृ मृ ना त वा य स्वा दा ॥ ॐ नृ मा द्य सि द्धि य स्वा दा ॥ ॐ आ व नी य स्वा दा ॥ ॐ मा म

की य स्वा दा ॥ ॐ प द नी य स्वा दा ॥ ॐ ना त्रा य व क्त पू ष्यं प्र ति च्छ स्वा दा ॥ क ल

५५ या ॥ १ ॥ ॐ आयुवृद्धि नमः ॥ ॐ कृष्णधर्मय नमः ॥ ॐ सप्रज्ञाय नमः ॥
ॐ सुखासय नमः ॥ ॐ धनवृद्धि नमः ॥ ॐ आर्वाय नमः ॥ ॐ सन्नानवृद्धि नमः ॥

॥ सुखनया ॥ २ ॥ ॐ गंगपतंग स्वाहा ॥ ॐ गङ्गाधिपतंग स्वाहा ॥ ॐ गङ्गाध्व
नाय स्वाहा ॥ ॐ गङ्गापतिपूजितंग स्वाहा ॥ ॐ विष्णुध्वनाय स्वाहा

॥ ॐ नागभननाय स्वाहा ॥ ॐ लम्बोदनाय स्वाहा ॥ गङ्गासया ॥

३ ॥ ॐ ममहाकालाय स्वाहा ॥ ॐ खर्वलम्बोदनाय स्वाहा ॥

॥ ॐ कृष्णपालाय स्वाहा ॥ ॐ महाकालाय स्वाहा ॥ ॐ महा

कातीयखादा॥ ॥ॐ च अतियखादा॥ ॥ॐ वनातीयखादा॥ महा
कातया॥ ॥ॐ उमेमानायखादा॥ ॥ॐ नद्रायखादा॥ ॥ॐ तद्रा
यखादा॥ ॥ॐ रुयायखादा॥ ॥ॐ सोम्यायखादा॥ ॥ॐ कपिला
यखादा॥ ॥ॐ गव्यायखादा॥ ॥ॐ गवायखादा॥ ॥ॐ समानाय॥ ॥
ॐ दंवजवानाक्षेहंरुद्र॥ ॥ॐ क्रौंथां गामिनिथेहंरुद्र॥ ॥ॐ क्रौं॥
॥ॐ माहनीथेहंरुद्र॥ ॥ॐ क्रौं क्रौं संचाननीथेहंरुद्र॥ ॥ॐ हं हं सचास
नीथेहंरुद्र॥ ॥ॐ रुद्ररुद्रचक्रिकाथेहंरुद्रखादा॥ वालक मानिग्राम॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ दीपकालाय स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यकः सोताम्भनूपसंपन्नः दहिमसुखसंपदः ॥ गलभया ॥ ३ ॥ महाका
लैकप्रवर्त्तकवृद्धभासनलक्षकैः कलिकपालधनवीनः प्रतापवृद्धनमस्तु
ते ॥ महाकाकानया ॥ ४ ॥ प्रसिद्धिश्च महालक्ष्मीः सर्वसम्पन्निदायकैः
नन्दारद्राक्या सोम्याः कपिलाय नमस्तुते ॥ रामानया ॥ ५ ॥ शुभ्यताकनूष्मा
त्माहं प्रिधगुर्वस्वतावगः कालकल्याणिवर्त्तकानमस्तु वज्रयोगिनी ॥ वातक
मानि ॥ ६ ॥ नूतंसंवीरनीर्जितैः वैश्वानरैर्महाकालैः भाद्रपदप्रदगावर्त्तैः
वृहत्प्रनिदायकैः वैश्वाननया ॥ ७ ॥ सगर्भना ॥ ८ ॥ कृष्णपूजा ॥ भाद्रपद

साधन॥ ॥ॐ निविजयकलभः गद्यपूजा॥ ॥ गगनमूलकलभार्चना॥
मूलकलभः आतक्तीः यक्षयक्षणी। नृसिद्धीः ॐ ह्ययकृष्टुः नागपूजा॥ ॥
जाप॥ ह्यगह्यधः आकर्षणः धूप॥ ॥ ध्याना॥ द्विनर्तवामि कं नचिद्रचिर्क
नः ह्यगीर्ध्यादियप्रविद्रपूनीर्गः। ध्यानापग्राम्वनपूष्यमन्दिनः नविनद ह
हीरुगकृष्टुतासनं॥ चिद्रं ह्यचिर्कनिनकि ह्यविभालनर्तः वैष्णवनामगप
गकह्यग्रन्थि गयी॥ उच्चैः शम्भं कश्चि नचु प्रचनन्यगार्कः संवाधितिर्क कल
भमृगचन्द्रताव॥ मूलकलभः ॥ ॥ वृं ह्यवैक मखादेवीः काचुनाऊ

प्रहृजाः ललीतासनाश्रयाः कननीलवत्क्रीनाः ॥ आः ललीया ॥ ॥

वज्रयक्षमहावीनाः हसिनाक्रोधनाननाः यक्षहीसहश्रालिङ्गः हस्तनवल

धनहीः श्रुत्माताधुर्गसयः वीतवज्रनमाम्यहं ॥ यक्षहीया ॥ ॥ नम

स्तु वज्रधूपायः किनधगुर्वनमाः सर्ववृक्षातर्यं वैद्यः धर्मधगुर्वनमास्तुर्ग ॥

श्रुतिहीया ॥ ॥ गायत्र्यं शुक्रवर्कचक्रः गजाननमहावतीः चतुर्भुजप्रित्त

गच्छः श्रुत्मातावलप्रदोः प्रकाशधुर्गपाप्रच्छः प्रजश्रुधुर्गविनायका ॥ नृना

यक्षगुया ॥ ॥ वज्रगर्ववर्नीशुक्रः सफरुनावर्तकृताः श्रुत्यमद्विस्त

यनः वामे महिधृगाधनाः ध्वान्मुनिरुगावृत्तः पूषादिपाप्रपूजीर्गनी॥
नागप्रया॥ ॥ धूलिपापेधूनकाऽऽः मृतकलः संखलंखनय॥ ॐ वः

ऊं मृगादकथत्यादि५॥ ॥ नितोऽरुना॥ पागार्धः श्रवमनः श्रुर्धः प्रा

रुह॥ ॥ सिंहूनः रुकुमः खानः सफरुः मगाः धाताः दक्षिनाकिग

य॥ ॥ पूषाग्या॥ ॐ वरुहत्यायखादा॥ ॐ वरुधर्मायखादा॥ ॐ

वरुनलायखादा॥ ॐ वरुधर्मायखादा॥ ॐ वरुकर्मायखादा॥ मृतकलंभा॥

१ ॥ ॐ श्रवश्रुधर्मायनम४खादा॥ ॐ श्रवहन्धनीयनम४खादा॥ ॐ श्री व

सुमति प्रीय स्वाहा ॥ ॐ वसुधा स्वाहा ॥ ॐ आमदात क्री दन निवा सनीय स्वा
हा ॥ आत क्रीया ॥ २ ॥ ॐ वज्रय क्रीया स्वाहा ॥ ॐ वज्रय क्रीया स्वाहा ॥ ॐ
नव क्रीया स्वाहा ॥ ॐ नव क्रीया स्वाहा ॥ ॐ कतः अदनाय स्वाहा ॥
ॐ महाग्रहाय स्वाहा ॥ ॐ महाग्रहाय स्वाहा ॥ यक्षय क्रीया ॥ ३ ॥
ॐ वैष्णवाय स्वाहा ॥ ॐ त्रिंशदाय ॥ ४ ॥ ॐ गंगपतये स्वाहा ॥ ॐ गंगपतये स्वाहा ॥
ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ॐ अन्ननाय स्वाहा ॥ ॐ प्रजाय स्वाहा ॥ ॐ नक्षत्र
काय स्वाहा ॥ ॐ वासुकीय स्वाहा ॥ ॐ महाप्रजाय स्वाहा ॥ ॐ अखपाताय स्वाहा ॥

ॐ कर्कशकार्यं स्वाहा ॥ ॐ कर्कशकार्यं स्वाहा ॥ नागपद्मया ॥ ४ ॥ धादभलाभा ॥
चमत्तादादना ॥ नर्पनयाया ॥ ॥ सुगि ॥ ॐ नमस्तु वज्रसत्वायः वज्रनलायः
गनमाः नमस्तु वज्रधर्मायः वज्रकर्माय नमः ॥ मूलकलभया ॥ १ ॥ नमस्तु
गुमहादेवीः सर्वसत्कार्यदायिनीः नमस्तु नैदिव्यत्रपितीवः वज्रध्वाननमस्तु नै
॥ श्रीलक्ष्मीया ॥ २ ॥ वज्रयक्ष्मसहावीजः यक्ष्मिणीप्रतिवाहिनाः यत्रामन
धर्मवीजः वीजवज्रनमस्तु नै ॥ यक्ष्मिनीया ॥ ३ ॥ सर्वव्यापिण्यादि ॥ त्रि
लीया ॥ ४ ॥ दैवश्लाघनमन्दैवत्यादि ॥ ५ ॥ नायककुल्या ॥ ५ ॥ कलाधि

पनि नाग राजाः स्वस्वदिभिरवस्तीनाः सत्कार्यसदा वृद्धिः वनूक्षायनमस्तु
॥ नागप्राया ॥ ३ ॥ भगवन् ॥ अधर्मा ॥ ॥ ॐ निजकार्यनपूजावि
धि ॥ ॥ यज्ञक्रियामाह ॥ ॥ अग्नि कृत्वा चिह्नानां ॥ ॐ हँ हँ हँ हँ हँ हँ हँ
मदनीवजिरववजवन्धहँ ॥ ॐ वज्रसत्त्वः ॥ ॥ धनगा विहिताया कृमिभ्रमना ॥
ॐ ॐ ममदा कृष्णादि व्याप्रविष्टा वृक्षद्वयगा ॥ वृक्षधर्मसंघनगा ॥ पृथिवीका
नदनागज्ञा ॥ सर्वविष्णुभक्ति कर्षक स्वस्ति स्वाहा ॥ ॥ सितानवक ॥ वृक्ष
भ्रमणानुसर्वस्वदन्तिनहगा दवगा गत्युत्तमाः वृक्षाद्या लीकपालाः स्वहृगदि
रमयप्रिः सिनेका कतभया कौभप्रक् पचात्रपूजायानामय ॥ २ ॥ ४ वादसाप्रमानै ॥ ५

[illegible]

॥ तिप्रपू॥

॥ अ० × पा० × पं० × ला

x मु x॥ ॥ दिगपूजा ॥ ॐ द्यादित्रावाहनमस्तु ॥ ॐ नमो वज्रस्य दिशि
 १ वज्रपातयंत्रकृत्स्नाहा ॥ पूर्व ॥ १ ॥ ॐ त्रिकलिकापिलः काल २ दक्षिणरिव
 मालिविन्ध्याकृत्स्नाहा ॥ अग्नि ॥ २ ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ यम ॥ ३ ॥ ॐ सर्वद्वन्द्व
 र्यंकनकनूत्स्नाहा ॥ नेमया ॥ ४ ॥ ॐ हृष्टप्रहृष्टशिरिमालिविन्ध्याकृत्स्नाहा
 हा ॥ वनूदा ॥ ५ ॥ ॐ सुसरवारवरवरवः स्वाहा ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ ॐ धनाधिगमन
 दाय आगत्यः कवीनाय स्वाहा ॥ उत्तर ॥ ७ ॥ ॐ इं इं इं इं सिंव स्वाहा ॥ ॐ भान ॥ ८ ॥
 ॐ उर्द्धवक्त्रं स्वाहा ॥ उर्द्ध ॥ ९ ॥ ॐ जूं ४ सूर्याय ग्रहपते स्वाहा ॥ वाम ॥ १० ॥ ॐ जूं

४ च दायन कृपाधिपग य स्वाहा ॥ सव्य ॥ ११ ॥ ॐ नमः पूथिव्या व शुद्ध स्वाहा
॥ त्रुष्णा ॥ १२ ॥ ॐ नागरय ८ स्वाहा ॥ वास ॥ १३ ॥ ॐ वंस विद्या ह नाचि प गं स्वा
हा ॥ सव्य ॥ १४ ॥ पं x पा x आ x नू x प्रो x ॥ ॥ पूषा या मा ॥ ॐ ॐ दाय
स्वाहा ॥ त्यादि x ॥ ला x घ ञ्छा x मु मि ॥ ॐ द्र ह न प्र नि ऐ वः व रु द क्षा म हा वत ८
भ ग रु क्षा धि पा दे वः सु स्ते ॐ दाय गं न म ॥ १ ॥ नील वर्क म हा का यः म दि
खा प्र ति ह स्ति ग ८ य म द गु के र्वे धार्यः कृ गा न क र्न न म सु ग ॥ २ ॥ शु क रु
मि क र्त्त का र्तः नू क ना ग धि प प्र र्त्त ८ क ल म ही के र्वे धार्यः व नू क्ष य न म सु ग

॥ १ ॥ ह्येनकायमहागंगाः कलकाकनसन्निर्ता ॥ ४ ॥ नृणां नृणां पदनिर्ण
कृत्वा नायनमस्तुर्ग ॥ ५ ॥ ॥ शुक्रवर्त्मसहाकायः प्रिष्ठलक्कपातर्क ॥ ६ ॥ सदा
कल्याणकातिगाः प्रिष्ठानाकनमस्तुर्ग ॥ ७ ॥ ॥ पीतवर्त्मसहागंगाः सुनापा
प्रकनधर्ग ॥ ८ ॥ वासिकमस्तुर्धर्माः नृणां नृणां मस्तुर्ग ॥ ९ ॥ ॥ नाकावर्त्मस
हाकायः हाताशनधर्माः ॥ १० ॥ स्वप्रकपातधर्माः विप्रः प्रिष्ठानाकनमस्तुर्ग ॥ ११ ॥
॥ १२ ॥ प्रिष्ठानाकनमस्तुर्गः ॥ १३ ॥ नृणां नृणां मस्तुर्गः ॥ १४ ॥ नृणां नृणां मस्तुर्गः ॥ १५ ॥
॥ १६ ॥ नृणां नृणां मस्तुर्गः ॥ १७ ॥ नृणां नृणां मस्तुर्गः ॥ १८ ॥ नृणां नृणां मस्तुर्गः ॥ १९ ॥

दंष्ट्रासनं नमस्तुते ॥ ६ ॥ नागसंहारवर्षकासंः पद्मनागसप्तप्रहं ४ सप्ताश्व
नयमस्तुते ॥ ७ ॥ वज्रसूर्यनमाम्यहं ॥ १० ॥ कुरुगुणानसंकल्पः रूतप्राकादि
किविर्गं ४ दंष्ट्रावाहनसंस्कृतः निष्कननमाम्यहं ॥ ११ ॥ पृथिविकनधन
येवः नमस्तुते ॥ १२ ॥ सर्वाङ्गकनकवर्णाः पद्मासननमस्तुते ॥ १३ ॥
नागनागाधुधवर्षः कृगां कुरुलिकनधर्यः पद्मापनि सप्तमासनः ४ नगनागयः
नमस्तुते ॥ १४ ॥ गुनागनमूर्धनसत्त्वः खड्गकधनवी ४ अमवर्कमहाकाय
शामविश्रायनमस्तुते ॥ १५ ॥ अगाधन ४ ॥ यधर्मा ४ ॥ ॐ नमस्तुते ॥ अतो क

प्रातः पूजा ॥

॥ हनुमान्निपूजा ॥ याचकं ॥ सिमनाद्यानयाचकं ॥ स

र्वपनगमलं ॥ ॐ सर्वपापसर्वकृष्णपक्वमसर्वदुःखविघ्नमानान्दुःखं ॥

ॐ मिहनुमान्निविधि ॥

॥ गनीमहावाक्य ॥ ननु ह्यादि ॥ ॐ ननु यूप

ह्यादि ॥ गन ३ पला ॥ दूधनाः ॥ यच्छात्रकदम्बका ४ केकेलित्वगय ह्रीं ॥

प्रक्षुब्धगादिश्चित्रय का ज्ञानकनिद्रिकादस्तदिधौ ४ श्रीवसधूनकपायका ४

४ निश्चननाभावीत्रयसंघनाकादिय हनुमान्निनाप्रक्षलक्षतस्था ४

ह्रीं ॥ ॐ प्रक्षलक्षतस्था ४ ह्रीं ॥

॥ गनीस्वस्तिवाक्य ह्यादि ॥

॥ गनी ह

ॐ नमः ॥ तत्र कृतिगान्निमध्य प्रकाशं ज्ञानं पद्ममात्मन्यनदूपनिर्वाणगान्नि
मनुसंनंकाशोद्वंजीगवर्कं भक्तमूरुवंतगुह्यं कं वा भदु क मनुसंनंकाशः स
ववत्रदाहकमात्माधनं पितामहवाहननं यज्ञप्रविर्गिनः त्रिनं जगाम
कूटध्वनिनः वज्रसत्वावक्रगं मोत्रिनं समयाग्निमित्राया ॥ ४ ॥ ॐ नमः कृदिमदाह
रुगदं वसुधिविदुसपामगुदित्वाकृतिमदाह क्रीतनिदिगीर्तवस्वादा
॥ ॐ गिननमनुनकृताग्निमावाकं ॥ ॥ ॐ श्रीगर्भकृदं ॥ ३ ॥ ॐ कृतिना
जमूदा ॥ ॥ सुरासुधा ॥ धूपवाकः धूपदान ॥ श्रावणन ॥ धूप ॥ ॥

रावः॥ॐ कालह्यवमहात्म्यः हस्तप्रववावलिर्गणसमाविधविन्यस्तः
गत्मन्प्रवममभ्यर्चनं॥ ॥ ज्ञानशक्तिमयं कुरुः सन्नामसमिधस्तुर्गः मन्त्र
यस्तु नयस्तुयः ज्ञानाग्निशक्तिरूपकः कस्य ददंति पापाहिः दीर्घमाकुरु दा
यकः आप्यायनीयुतावापिः प्रविश्वार्चनननुः गत्यर्दप्रममन्मानः गन्
धानं वृक्षयदगाः नारीमन्त्राह्निर्गप्रमः ॐ ब्रह्मादिदेवताशा पद्मचन्द्रा
र्कमन्त्राह्निः वीर्यं कालसंहारवा॥ नादविन्दुनामिर्गः वीधिज्ञानानाविधि
॥ॐ नूनयदीप्यादिप्याविषाविषमहाशायदव्यक्रवाहनायदस्य

ॐ ४ दू वै क्षो ४ समय ह्यमिति ॥ ॥ नितं ज्ञन ॥ वलि ॥ ॐ ३ काल मखर्या
दि ५ ॥ ॥ ॐ वज्र नरुदं ॥ सुगंधा ॥ ॥ ॐ वज्र यदुदं ॥ भगवत ॥ ॥
ॐ ३ ज्ञ प्रवत्र सस्का नाय नू र्छ प्रगिच्छ ४ स्वाहा ॥ मद्रि ॥ ॥ ॐ ३ ज्ञ प्रवत्र भस्का ना
य प्रा र्छ प्रगिच्छ ४ स्वाहा ॥ पादो ॥ ॥ ॐ ३ ज्ञ प्रवत्र भस्का नाय आच मनं प्रगिच्छ
४ स्वाहा ॥ वकु ॥ ॥ ॐ ३ ज्ञ प्रवत्र भस्का नाय प्री कर्न प्रगिच्छ ४ स्वाहा ॥ सर्व भ
लीता ॥ ॥ ॐ वज्र गं को ॥ ३ ॥ ॥ ॐ निमं न समय ज्ञो प्रवत्र ४ ॥ ॐ सर्व ग
था गत काय विश्व धर्न दं स्वाहा ॥ प्रक् सुगंधा दि हान ॥ ॥ ॐ दूं प्रो दूं र्व ४

ॐ माघप्रतिपद शुक्लपक्षयश्चित्री शुद्धसप्तमहापक्ष ईर्क् नोर्किर्ख ईर्
रुद्रस्वाहा ॥ पद्मगव्यनहाय ॥ ॥ शुभसुधा ॥ सिद्धा ॥ स्वाना ॥ ऊऊम
सुक्ता ॥ मगा ॥ धमता ॥ ॥ पूष्ययागा ॥ ॐ नृग्नय स्वाहा ॥ ॐ कालिगा
य स्वाहा ॥ ॐ प्रकालिगाय स्वाहा ॥ ॐ विष्णुकाताय स्वाहा ॥ ॐ हसनकाताय स्वा
हा ॥ ॐ मानिरात्राय स्वाहा ॥ ॐ पूरुषरात्राय स्वाहा ॥ ॐ नृग्नय स्वाहा ॥ ॐ गङ्गाकन्याय
स्वाहा ॥ ॥ लाम्बाचक्रवादनः सुगि ॥ नृग्नसुवीरुनिर्गमः पीतवर्क मदीक
तः पीताम्बनाधनागैः नृग्नयनमस्तु रकया ॥ तनुर्नुजामदानैः नृग्नयनमस्तु

कूटध्वजनीः वज्रदात्रुक्रमालकः दधुकमधुतुध्वनं ॥ उक्ता कलिगायत्राः दि
कालासमावृताः प्रितंराभरिता दहाः नूनमायनमस्तु ॥ ॐ नित्ययाग्निः
॥ ॥ धनदायकं ॥ शुभाङ्गी दाताः आपयास्यः धमन्नुनधेतश्मध्वनयाय ॥
ॐ ग्राह्यादा ॥ ॥ प्रक्षपवानपूजा ॥ सुमि ॥ ॐ सर्वपापदहनवजाय सर्वपा
पः दहस्वदा ॥ ॥ कास्वचकं ॥ प्रनिविम्बसमाह्यादि ॥ गधगाह्यादि ॥
पापपूजा ॥ ॥ ध्यान ॥ न तो इग्निमूर्खित्वा नैव यवकृतप्रमानं शुक्रवर्जं चि
ताय ॥ जान्त्रयननह्निगश्रुवेववन्दिमूर्खित्वा ॥ स्वमन्त्रनविष्टावृणाक्रमि

दद्यात् ॥ ॥ गंगा रावना ॥ प्राकृत सर्वगणेशः पादं पादो पदा पयः ॥
सुद्धिर्नू च गंगा दद्यात् वक्तुं रावमननकथा ॥ सर्वद्वयमखगन्धः दृदिगितसिद्धि
पूष्यकः रक्तलोकादिकं सुखः कोलायाधूपनकथा ॥ समिद्धकादिकं सर्व
प्रतायादिपूनंपूना ने वाद्यादिनसाधनः पूनगकृष्णवत्सवः ॥ समिद्ध
विवर्द्धनिसिगितं पापापदं अनिकृत् ॥ सिद्धार्थवत्सवृद्धीकृत्सुविपूनेमाह
पंयवावंगदः कुरुंगदं विवर्द्धनः सुकृतसुप्रया अतिधनकः ॥ अधूमश्च नि
मोगदः सुकृतकवितरुतकथकृत् ॥ गंगावृद्धि कविअमित्तधूपयः प्रजा

प्रदं सोमदं: सोताग्नादिरुतप्रदं सतित्तं कंकादिपूष्पाहं मी: दीपादीफा
विवर्द्धनीदधिगुणानवापि सोताग्नादं: दूर्वायुवत्तद्विनीसकतसप्रत्यान
कंतायार्कं ॥ गाम्भूनधनदं सत्तदनगतक्रीप्रदं आश्वनं: स्वच्छासिद्धिजनप्रदा
शनितसखागेताकसंपदं ॥ मूकिकुल्लकुलाविप्रर्हि नदितां: दद्याद्दृष्टानाप्रमा
: स्वच्छासिद्धिविवर्द्धनि सूनगहो ॥ संस्थायतादवता ॥ ॥ घृतं नोपनिलिफं
न: समिधप्रनिश्मधय: मनुं नवाविर्गं संम्यक्: शूद्रयादुसवकुपानिष्ठा ॥ ॥
थन: त्रुष्टादश: प्रादशसिश्मधनयाय ॥ मनु ॥ ॐ त्रुष्टादश ॥ ॐ त्रुष्टादश

दा॥ घृणोपनिषत्तु सर्वसमिधं कुरुयात्॥ ॥ धनसिद्धयामनु॥ ॐ नृकाय
स्वादा॥ नृनपानसि॥ १ ॥ ॐ वज्रशमायस्वादा॥ पतङ्गसि॥ २ ॥ ॐ वज्रगन्धना
यस्वादा॥ स्वयनसि॥ ३ ॥ ॐ वज्रवृद्धायस्वादा॥ जूषामाजसि॥ ४ ॥ ॐ शोभा
स्पतयस्वादा॥ ॐ वृषभधूसि॥ ५ ॥ ॐ नृसुत्रार्त्तमायस्वादा॥ नृशमन्धसि॥
६ ॥ ॐ वज्रकूर्वायस्वादा॥ वनःकादा॥ ७ ॥ ॐ वज्रयज्ञायस्वादा॥ दूम्बनसि
॥ ८ ॥ ॐ वज्रदिङ्गिकायस्वादा॥ उदूम्बनसि॥ ९ ॥ ॐ वज्रवक्त्रकायस्वादा
॥ वक्त्रसि॥ १० ॥ ॐ वज्रगनिष्ठनायस्वादा॥ गनिकसि॥ ११ ॥ ॐ वज्रवीह

धिवृक्कायस्वादा॥अश्वकसि॥ ११ ॥ॐ वज्रनायस्वादा॥पिनागसि॥ १३
॥ॐ वृंक्षवीकायस्वादा॥वृंक्षनूतसि॥ १४ ॥ॐ वनूनायस्वादा॥वनूतसि॥
॥ १५ ॥ॐ मधूलैस्वादा॥मधूकीनसि॥ १६ ॥ॐ मधूनैस्वादा॥मधूनसि॥ १७
॥ॐ अश्वकायस्वादा॥अश्वकसि॥ १८ ॥ॐ सर्वपापप्रमनायस्वादा॥वेकं
कसि॥ १९ ॥ॐ सर्वत्रागप्रमनायस्वादा॥नीकठ॥ २० ॥ॐ सर्वकृमप्रदह
र्भनायस्वादा॥नीकठ॥ २१ ॥ॐ वज्रसदृशनायस्वादा॥शाम्बसि॥ २२ ॥
ॐ वज्रचूनायस्वादा॥चूनसि॥ २३ ॥ॐ निचूनकायस्वादा॥निचूनसि॥ २४

॥ॐ कदम्बाय स्वाहा॥ कदम्बसि॥ २५ ॥ॐ सर्वनाशदाय स्वाहा॥ जम्भानक्ष
सि॥ २६ ॥ॐ वज्ररित्ताग्निकाय स्वाहा॥ रित्ताग्निकासि॥ २७ ॥ॐ वज्रपीतव
र्ग स्वाहा॥ पिताग्निकासि॥ २८ ॥ॐ वज्रकर्क माय स्वाहा॥ नीलमनकसि॥ २
९ ॥ॐ वज्रवर्णक नाय स्वाहा॥ मिक्तिसि॥ ३० ॥ॐ वज्रपीया लमाय स्वाहा॥
॥ प्रियं गुं॥ ३१ ॥ॐ वज्रमदनाय स्वाहा॥ मदनकसि॥ ३२ ॥ॐ निद्रा
प्रिभगसमिधि॥ ॥ॐ जूप्रनिद्रगवज्र स्वाहा॥ कण्ठदय॥ ॥ॐ वज्रा
यूष स्वाहा॥ दूर्वाकुडुट्टरूपय॥ ॥यनः संखजतनः नाविदिहभधन

यायवाकं॥ ॥विमलं गंधर्वसंशुद्धं: निर्मलं जलपूर्किणं: दग्धनलाभना
गव्य: गिंक्षयविदिग्धधन॥ मनु॥ ॐ सर्वविदिग्धं क्वं नो ४ हं स्वाहा॥ विदिग्ध
धन॥ ॥विदिग्धमनु॥ ॐ सर्वपापदहनवजाय सर्वपाप: पद १ स्वाहा॥
स्वाहा॥ ॥ ॐ वज्रपूषे स्वाहा॥ अक्षय॥ १ ॥ ॐ वज्रवेगभय स्वाहा॥ यव: मंटी
॥ २ ॥ ॐ वज्रचक्षुनाय स्वाहा॥ समधु: माटी॥ ४ ॥ ॐ वज्रवीजाय स्वाहा॥
भाति: ह्यानउम॥ ५ ॥ ॐ वीजीरुवाय स्वाहा॥ धान्य: पूषा॥ ७ ॥ ॐ महावताय
स्वाहा॥ मास: मास॥ ७ ॥ ॐ वज्रमूर्गमाय स्वाहा॥ मूर्ग: मू॥ ८ ॥ ॐ वज्रमहा

का नाय स्वादा ॥ न्यातः मू ॥ ९ ॥ ॐ वज्रकीर्मा मपि तु स्वादा ॥ कोठः कीली
॥ १० ॥ ॐ आ ४ हं सह मा म के स्वादा ॥ प्र मा सा ॥ ११ ॥ ॐ वज्रज्ज ता म्ब ना य स्वादा ॥
तु मि ॥ १२ ॥ ॐ वज्र क द म्ब ता य स्वादा ॥ क य गु उ ॥ १३ ॥ ॐ आ ४ म्ब ग सि रु ता य
स्वादा ॥ मि सि ॥ १४ ॥ ॐ आ ४ हं वज्र य हं स्वादा ॥ सि कि वा ॥ १५ ॥ ॐ वज्र ना जा य
स्वादा ॥ ना य ॥ १६ ॥ ॐ आ ४ हं स्वादा ॥ रा य म्ब ॥ १७ ॥ ॐ सर्वार्थ सिद्धि य स्वा
दा ॥ त्र य का ॥ १८ ॥ ॐ सर्व कं ग प्र म म ना य स्वादा ॥ प्र का ॥ १९ ॥ ॐ वज्र प्री त
व रं स्वादा ॥ प्रि य गु ॥ २० ॥ ॐ आ ४ वज्र द म्ब नि रु ता य स्वादा ॥ क न रु त ॥ २१ ॥

ॐ अ० प्रिरुतरुताय स्वाहा ॥ नमः ॥ १२ ॥ ॐ अ० मधूनतिमिवाय स्वाहा ॥
 ॥ वयसः ॥ १३ ॥ ॐ सर्वभूम्यश्वाहा ॥ दधिउता ॥ १४ ॥ ॐ अ० हं रुद्र स्वाहा
 ॥ सुकिः ॥ १५ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ विद्विष्मधनयाय ॥ मनु ॥ ६
 ॐ हं ग्रां क्रौं ॥ १६ ॥ ॐ सर्वविदिर्दिं स्वाहा ॥ अ० धनमं ॥ ॥ अ० विदिदय ॥
 प्रथमाहं नियाय ॥ मनु ॥ १७ ॥ ॐ अ० हं ॥ ॥ यनाश्रुनापाग्रः धनयापतय
 काशः अग्निमनुतलायकः मनु ॥ १८ ॥ ॐ हं रुद्र ॥ ॥ हं रुद्र ॥ ॥ हं रुद्र ॥
 ननहिं गं वामकनैवचनपूर्वपाविमादायाः दक्षिणकलं नाक्षमूरवश्च वामादा

यसमित्यप्रदक्षिर्हं कावयित्वाः आत्मानमिष्टदेवगानूपमसुखदुःखवर्जविवृत
 मुखयथानूतवसकप्रियच्छस्यैकविंशत्यादुर्मिदशात् ॥ शुभापागम
 कलधामनथस्य अग्निं कृतदायकं ॥ ॐ अग्निं मूर्ध्नि पादो सर्वगं ॐ ऊर्ध्वं
 होर्ध्वं रुद्रं प्रवतसस्कात्राय ह्यर्धं रुद्रं स्वाहा ॥ पक्षपचानपूजा शुभापागम ॥
 आदुर्मियाया ॥ स्वस्ति वाक् ॥ ॐ अग्निं यदि प्यादि प्याविषाविषमदाश्रायद्वय
 कथयवाहनाय ऊऊमानस्य गमिं पूहिं कुरु स्वाहा ॥ मनु ॥ शुभापागम ॥
 पं० ला० ० ॥ ॐ नि प्रथमादुर्मिविधिः ॥ ॥ क्लृप्तादुर्मियायना ॥ चतुर्गमधनः ॥

ना॥ क्षामाग्निर्वैवविधिनाः चतुर्कं प्रश्नध्याः कीनाश्च खड्गमधूदानि गयूक्तं अलिं
प्रच्छ मृगं प्रतिमयाय ससिद्धि मन्त्रैः दमादि प्रापनिदिगं प्रतिवापनीयं ॥ ॥
चतुर्वक्त्रं नमो लोमना ॥ ॐ वूं न्रीं किं रवं हूं ॥ ॐ दिव्या नध्या नप्री वनं स्वाहा ॥ ॥ न
गोवक्त्रं नाचमनादिकं कृत्वाः लोकां कृत्वा नानाग्निभिस्तथा ॥ काला कालाग्ने य
द्वाग्ने हृदिकं मलचद्रासना पतिः महुलाधिपति विज्जनि स्य नचिं कः वीज पति
क्षामं महुलाधिपतिः समाहुलं यं विता वयं शास्त्र न सत्वक वजां कृष्णादि सिना क
षा प्रवक्ष्याम्य यद्वा सना विन नीलमिवः समन सत्वं सदैव किं कृत्वाः अरिषिं कं प्रा

रुनार्घपाशा चमनादिकं पूजास्तुतिपर्यन्तं कृत्वा इदं यातु ॥ ॥ अथाविधि
द्वय ॥ मूलमनु ॥ ॥ चतुर्द्वय ॥ हृदयमनु ॥ ॥ आदुमियाय ॥ स्वस्ति वाक्
॥ ॐ नमो न्यादि ॥ ॥ नमिहानादुतिविधि ॥ ॥ तनीकलंभदुमि ॥ कलंभयान
मालक आदुमियाय ॥ आ ॥ धू ॥ आ ॥ नू ॥ प्रो ॥ पं ॥ पू ॥ ला ॥ मु ॥ ॥ नमिहाना
दुतिविधि ॥ ॥ धनः ॥ उतिः ॥ भलादुपूजा ॥ ॥ जाय ॥ सुता ॥ शुद्धा ॥ ॥
नो कर्षना ॥ धूप ॥ ॥ धाना ॥ नदुह सर्वदेवानां ॥ महुसंपन्नमाहुतं ॥ नसना नद
सदुजः ॥ यप्रज्ञातात्स हो कयत् ॥ मनु मूदासमायूकः ॥ वजां क आदियोगनाः ॥ धि

८८८८ किं नाद्याः ज्ञानवद्विषमाकथं ॥ ॥ गत्यदं पत्रमध्वानं गत्स्वानं व
कृवेदगाः नाहिमध्वलिगंपदमः ॐ द्यावादिगदेवगाशापन्नवद्वार्कमध्वल
वीऊं कानसमृवाः नादविचूकनाग्रितं यत्वं वीधिरू ज्ञाननाविग ॥ देवगाकृ
गीमुखेनूकात्र तयवरुत्तप्रमार्तं शुक्रवर्जविराव्यं ॥ जान्वर्यननलिगः श्रवेन
वंकीमुखेवंकृष्टगाकृगिदद्यात् ॥ ॐ द्वाथसिद्धिदावद्विः मयिदास्य
देवगाः लावकमात्रनूपेष्टः ॐ यथात्यादिकानयं ॥ पाणिप्रज्ञाश्रवापायः
गच्छ ॥ इदयलावनाः गगाविनिगगातृपिः मद्यज्ञानामृगं मगं ॥ गं नसकत्य

दवानां: कत्मानं सत्तनात्तनां: नुवंकनामिथादा मं: सिद्धि सोताग्य सम्यदं ॥
प्रिसफेकविस्त्यादि: यावच्चैतत्तत्तकोटि ५४ खद्या सिद्धि नू ५५ त्रैल: मनु नू ५६
दितामनं ॥ ॥ मुखसर्वदू गित्ति-त्य: विदि सर्वदि तावना: चनू सर्वप्रसा
याच्छ: ३ कला कलिगानन ४ ॥ ॥ गनी देवना या च्छान ॥ ॥ नितो ऊह
ना ॥ स्नान ॥ सिद्धत ॥ ऊऊ मका ॥ खान ऊप या दा डी दाय: स्वसि वाक्का ॥ ॥
सक्त ऊ ॥ मना ॥ क्षता ॥ ॥ पूषा न्या ५: मातकी ॥ ला ५५ च छवादन ॥ नप्य
न ॥ मुगिमा को या यरु ली ॥ ॥ नू गि ५५ ता देव: दंतु या विधि ॥ ॥

धनाः दशकर्म देवप्रगिहामदूष्मा॥ दिगवलिविद्य॥ पूर्वायाय॥ ॥ देवकर्म
 म्मदग॥ देवप्रगिहाम॥ दशमग्निविधि॥ ॥ ॐ नमो ब्रह्माय॥ दशकर्म
 ॥ ॥ अथादोयानिहंसाधन४॥ मन्त्रोपनयनप्रश्नः॥ ज्ञाननामोपनयना
 निवृत्ताकनममवत्वा॥ वर्त्तमानमावर्त्तः प्राप्तिप्रदायिककर्मणिः॥ नमो देव
 मक्रियायोगः निर्देशनापि न द्रष्टव्यः॥ ॥ ॐ स्वर्गस्वर्गनाय॥ ॐ स्वर्गनाय
 दायहंरुद्र॥ ॥ वजनयि॥ गथागमयसातावः॥ गत्स्वतावमिदं कुरु
 ॥ गथागमनिश्चयः॥ निश्चयतावमिदं कुरु॥ ॥ श्रीकर्म॥ स्वव्यापि

सर्वसम्बन्धाः तादृशस्तथा सर्वगः ॥ ॐ ह्रस्वज्ञा कृता प्राप्तिः सानिध्यां कर्तुं मर्द
थः ॥ ॥ सिद्धनासधूपयने ॥ यथादि सर्वसम्बन्धाः गुणिना संप्रतिष्ठि
ताः मायाय वायथा कृताः सा प्रदृष्टि ॐ ह्रस्वज्ञा ॥ ॐ ह्रस्वज्ञा ॥ ॐ ह्रस्वज्ञा ॥ ॐ ह्रस्वज्ञा ॥
धनमनु ॥ ॥ यद्गुणः चन्द्रय ॥ ॐ मन्त्राग्नेयस्वाहा ॥ पञ्चपत्रा पञ्चाः गुणा
प्राप्तः ॥ ॥ ॐ निजानि संसाधनक्रिया ॥ ॥ रावता ॥ नमो नमि
अग्निपूर्वमनुलः स्रजका हा कालविदहि ना कलः ॥ प्रियाय वी ॐ नमः स्ववी ॐ कं
समनुलयाधिपधिपकिर्न ॥ ॥ सिद्धाय धूप ॥ यथादि सर्वसंबन्धाः

सुप्रियासंप्रतिहितिनाः मायादेव्याय आकृष्टा न द्विगुह्यविदा कृता ॥ अथ
रुसुगं नाथ दत्तापूष्पादीकानिमान् गृह्णातां मनूकम्यायः वीचिचिरुप्रवृ
द्धय ॥ समन्वाह नमुमां वृद्धाः नृणां प्रादिह अहितिनाः वरुसत्त्वह मायायां ह
देवताकल्पया सदा ॥ भिषात्मनः कृम्यायः सत्त्वार्थप्रतिदेतुनाः वीरुहर्ग
महाज्ञानः प्रगिह्य कर्तुमर्हथ ॥ ॥ यत्नसत्त्ववृद्धया ॐ मंगलाग्नये स्वाहा
हा ॥ पंक्तपञ्चानपूजा ॥ ॥ ॐ निपूजितवन्नक्रिया ॥ ॥ ॐ निप्रतिपाह
प्रप्रतिपूज्य देवताः ददन्तु कर्मा कवपूज्य च द्रव्यम् ॥ स्ववीरु नमिप्रभवां ह

कृष्णदुःप्रवेशवध्वाप्रविगाहयत्नः॥

॥थनवीकथनी॥मुद्रद्व

माकलःउद्रद्वगायामूलमन्त्रनःउद्रनय॥

॥श्रावकषता॥उं वज्रं

कृष्णवीकमहुलमाकर्षयत्नः॥

॥उं वज्रपाशवीकमहुलप्रवेशयत्नः॥

उं वज्रस्नानवीकमहुलवन्दयत्नः॥

॥उं वज्रं वंशवीकमहुलसनीष

यत्नः॥

॥हावना॥समस्तकृत्तृष्टीसमाधिहाविनाःविधयम्

नदृदयारिजानीनाःअगाह्येऽपूरकदृष्टकात्रिनाःसवाङ्कगुक्काद्यवलि

प्रदायिना॥

॥प्रक्षापवावपूजा॥उं श्रावकपूषाहं॥उं श्रावकधूपे

हं॥ॐ॥ आ० व० क० दी० पे० हं॥ॐ॥ आ० व० क० ग० ह्य० हं॥ॐ॥ आ० व० क० ने० वी० ह्य० हं॥ ॥ वसि
विय॥ ग० गी० यं० का० न० व० वा० य० म० हु० ले० ह्यादि० x॥ॐ॥ दे० वा० शु० ना० सर्व० नु० कं० ग० सि० ज्ञा० स्ना०
का० ह्यादि० x॥ अ० ग० क० न॥ ॥ पू० वा० ख० य० रु० ल० य॥ दे० व० न० द० ल० थि० स० म० ग० ख०
यि० प्वा० न० वि० य॥ ॐ॥ य० रू० अ० न० क० नि० या० य॥ वि० हि० पू० य॥ॐ॥ उ० प० वा० ना० न० य० स्वा०
॥ न० व० ला० ह० अ० पू० र्क॥ ॥ ॐ॥ नि० द्वि० मि० य० सि० म० नी० प० न० य० क्रि० या॥ १ ॥
सि० ज्ञा० व० प॥ अ० य० म० स० रु० लं० क० र्म० स० रु० लं० की० वि० न० अ० म० स० म० स० ख० य० दे० वा० नां० र०
वि० गी० ह० न० स० न० य० ॥ अ० दे० व० ली० र० वि० ष्या० मि० वी० धि० चि० र्क० क० र्च० न० न० श० न० थ० ग० न० क०

तापरिः समामाद्या नमः सयः ॥ अग्रमिदिवत्तद्वत्तः यक्षीपञ्चननूकनाः
सन्निपातीत्यामद्वत्तः सर्ववृद्धनिमन्त्रीना ॥ ॥ नितान्तरना ॥ खिन्ना ॥

॥ ॥ यथादिजगमाय हस्तापिना सर्वतथागतान्तादह्लापरिष्ठाभिः
ईदिवानवाविष्ठा ॥ ॥ मंभलंखनदाय ॥ ॐ सर्वतथागतान्तिष्ठकसमर्थ
प्रियदं ॥ ॥ नअनलपंचनलनया अत्रुर्वयाय ॥ आकाशवजादिस्वरू
पकंवाः प्रवीनानकच्छददकविष्ठाः दृष्टिग्रहीवाननसायत्तातः सीमान
वाह्यननिपूर्वचयं ॥ ॥ प्रिकायाविष्ठानया ॥ ॐ न्ना ॥ ॥ न्ना ॥

याय॥ किं० न० ॥ ऊं० क० ॥ खं० घा० न० ॥ हं० की० ॥ हं० द० द० य० ॥ हं० ना० ॥
॥ चिद्रुका नः व्यापातिया हान पूजा याय॥ दृष्टि वियकं॥ ॥ दाकि
विय॥ वलंग न मात याय॥ अका न हूक माका च न का न रु न क थ नः॥ मी ल
न न न ता या ०ः प्र हू ख ख न भ्रा म ना॥ ॥ वऊ न मिखा भयिय॥ अ ची म का
ना हू वः हू य दृष्टि॥ वा भट का ना हू व च दृष्टि॥ स चि ए सी व क स ना क या वाः
दी पा ऊ ना द भ मिखा पृ हू च्या॥ ॥ नू ऊ त न मिखा हू उ य कं॥ नू हू न प
न न व हूः नू प वि हू डि न हू वाः स ना का वै द नू क हूः य थ ली क हू मि मि तं॥

॥ ॥ अहं नमः ॥ ॐ चक्र १ समन चक्र विश्वधने स्वाहा ॥ ॥ अना
क ॥ ॥ ॐ दिव्य चक्र धर्म स्वाहा ॥ ॥ क्रमकनकने ॥ ॐ धर्म चक्र धर्म
स्वाहा ॥ ॥ मगकने ॥ ॐ प्रज्ञा चक्र धर्म स्वाहा ॥ ॥ वडाकने ॥ ॐ वडा च
क्र धर्म स्वाहा ॥ ॥ स्वयत्तवा दकाय ॥
॥ निदृष्टि दाम विधि ॥ ॥ धतकक्षिः वसंगत हत अतया ३ वा ॥ ॥ अ
श्वहृ पप्र विनिधाय यूकः श्री द्रावृ न हानि नयूक न ह ॥ ॥ अश्व दय वै न द
ग्न धनयाः दद्याच्च पीताम्वनका च्छकादि ॥ ॥ धतकक्षि न के वा ॥ ॥

श्री वा अगु नय

ॐ श्री ४ समा ध्या ग इ इ क व वा व जि न स्वा हा ॥ लि वाः रूं ग न य

ॐ श्री ४ सर्व ग थ ग ग म धू प्रा ग न स्वा हा ॥ ॥ दू दू ला य क वा क ॥ ॐ सर्व ग थ
ग गा चि ना मृ ग धा न या दू ग्व धा न य स्वा हा ॥ ना सि च क ॥ ॥ गु पी लं वा वि
यः रूं वा वि य ॥ ॐ श्री ४ व ऊ वा स ए हूं स्वा हा ॥ ॥ रं ग न ग च क ॥ ॐ श्री ४ नि
ल कं वि रु ष न स्वा हा ॥ ॥ चि पा रू षा य ॥ ॥ पू र्व ण चा ढः क ल ग न ला
नः नि ल व ऊ चि द्रुः प रू हू ग ध न लं प न या य वा क ॥ ॥ य त्मं ग लं क लि स प्रा नि
स व ऊ ना ऊ ४ आ व ऊ ना ग व न सा धू स मि गं न ॥ ॥ नू क्षी त्र ना ऊ हू ग न स्र म हा
सू ख स्र ग त्मं ग लं व नु गं प न मा रि ष क ॥ ॥ ध नः ना नी रूं द न ॥ ॐ श्री ४

४ नानी कंदय र्हं स्वादा ॥ ॥ यरु सश्रुद गियाया ॥ च नूदया ॥ ५ प्रगहा ॥
जनय स्वादा ॥ ॥ ०० गि ए गिय जात कर्म क्रिया ॥ ३ ॥ गनी रावना ॥ स्व
दुदय गन पूरु वीरुः नीनाम मालं प्रकल स मूदानि श्रु न सम्राजत्मा ॥ मुकु
धुन कलि भाग्र विन्य ए वि श्रु मूद्धिः विदु गदुदय मन्त्रि रु प्य मन्त्री लु न न ॥
॥ ॥ ०० गन गची कल गन लानया चक ॥ चक्र चिंका ॥ पचु गय न
लेपनयाया ॥ वा ॥ य स ख न ल व न धर्म सुकर्म वकीः मूद्रा गल न सदिग ह
ह्य विप स्य क ह्यः वैला च न ह्य र व दू ४ ख वि ना भ क ह्यः ग लं गलं र व रु गं देव

नातिष्ठिकः॥ ॥ वलंगनदलसनामचायाः देवयाक्रमपानमगद
यवाक॥ ॐ नमूकनामदेवजागरुद्ववः॥ ॥ यद्वसःचनूदय॥ ॥
दुगियाया॥ ॐ प्रार्थवाजनयखादा॥ ॐ गिनामककक्रिया॥ ॥ ॐ रुनम
वाककलेभनलाना॥ विश्ववजचिद्व॥ प्रक्षप्रचिनलेपनयाया॥ वाक॥ ॥
वजनरुववजद्वसवजपाविः समुसिनाचसदिगह्यनूभाद्यसिद्धिः॥ यत्संग
लंहिगकनंपनमार्थसिद्धिः॥ गत्संगलंतवतुनंदवनातिष्ठिकः॥ ॥ प्रक्ष
प्रवात्रपूजा॥ ॥ महासुखमहाभागः॥ सिद्धिस्तुवजगत्वयाः॥ सर्वसत्यम

धर्मधामपुनविधानात् समयस्मन नादपि ॥ कृपया सर्वसत्त्वार्थः कर्तुं सर्वसिद्धय २
नाद्यापिः सर्वसत्त्वद्विद्विग ॥ सर्वसत्त्वपिता ह्येतव कामाग्रसमयाग्रिदा ॥ सत्त्व
नास्तनमनार्थः कामात्वं प्रनिपूनयन्तु ॥ ॥ ५ ॥ महासखवजः ५४ ह्वं
५४ समयत्वं समयदा ॥ ॥ आकर्षणयाया ॥ ॥ आसनिमकुनं राग्य
ः प्रासाग्रसमयाह्विगः ॥ ह्यगनु सोधनार्थकः कल्पसना प्रयासना ॥ ॥
॥ ॥ गिजाज्ञारमनु ॥ ॥ द्वादलं च विद्या ॥ वाक् ॥ चिदां गिं कं च मूनिपं
गंवपूयकं यः स हो कयचरु तमिलग ॥ ॥ ॥ ॥ गं रायला लविम्लमयपू
र्क रागुः कास्मनूत्परुतज्ञाः विविचिन्निधाय ॥ ॥ ॥ दिव्यवाप्तस्य स्वादा ॥ ॥

असागया॥ अः सिफिनीदाहस्तप॥ वाकं॥ नमोस्तुताम्वमधूकैर्कटिठिठिठि
कंः दादिम्वकेछुकैरुत्तरवकेयनध्वानाः नाजर्गनात्मधूकीतसूवीऊप
ताः नाशानकमिरुत्तरकेध्विकेनादिहस्तध्व॥ ॥ असागनकेवाकं॥ ॐ नमः
वऊदभनसमाधिरुत्तरसर्वम्विषयपीनयनस्यादा॥ नासिकं॥ ॐ गिरुत्तरप्रा
सनविधि॥ वलगगहस्तद्यायऊत्ता॥ ॥ नितार्कः नमोस्तुताम्वमधूकैर्कटिठिठिठि
सगनविय॥ ॥ पतिवदविय॥ वाकं॥ ॐ वाध्यांगदधकवचवस्तुनस्यादा
३॥ ॥ असागदाहस्तप॥ वाकं॥ अस्त्यनमार्यदधिरवहुमयाविकालंः स

वज्रं नंप्रचूलं सप्रनमं सकानंः समधूमधू विविधनिर्मितलङ्कादिः सम्या
सयश्च विविधनापनिः समधिगानं ॥ तगाद्यनसुप्रचर विविधमद्यमानः प्रकाः
जातिरवाद्यादीनि विविधानि च प्रिष्टकलङ्कादिकनिर्कंदत्वा प्रणयकमेक
कंपिष्ठनवकाद्यनूकामेकम्यल्लङ्कृतमद्यजलगा मूलकसुममालाचिदय
द्यान् ॥ ॥ जानके ॥ ॐ नमः समनवृक्षानां भाजीवलचयदेहादा ॥ ना
सितके ॥ कलंकदीया ॥ ॥ वजनप्रिकायाधिष्ठाना ॥ ॐ श्री ४ दे ४ ॥ ॥
ॐ दिव्यानध्वानप्रीतनखादा ॥ ॥ यज्ञगतनूद्यया ॥ श्रीकृतियाया ॥ ॐ ह

आग्नेयस्य द्वा॥

॥ इति पक्षमाष्टनयनक्रिया ॥

॥ पश्चिमस्य द्वा॥

कलेशानहाना॥ अकपक्षविद्वा॥ पक्षमृगनलंप्रनयाया॥ वाक्का॥ यत्संगं तं सक
तपादिसवजनीकं॥ चक्राक्षप्रवजताप्रयगस्य यस्याः॥ लाक्का॥ अत्र स्य सृग
नस्य सूर्यात्मकस्यः॥ नत्संगं तं तवगुणं प्रवमाति ध्रुवका॥ ॥ काउभय ॥

॥ ॥ रावना॥ द्रुवजिह्वनय प्रनिर्मितमहागि द्रुद्रुनधायकाः॥ रुमा
श्रावततप्रवद्धकृष्टितान् समुगायामुद्रया॥ हानाकावस्यनूपराविगमिः॥
षाचू॥ अक्षगिकल्पयन्ः॥ काक्का॥ धर्मविवद्धपापपटलान् समुद्रस्य च द्रु

॥ नानात्रलविचित्रहंसः सकृदः कर्मावगत्सीकृतः नागभद्राकृष्णगितान्
 कृत्तुलहताधगतिगार्गककम्पः सूकादात्रप्रलम्बिकधीवनयकंयूनर्हिहान
 नंवर्चदात्रितकिंनिकः चवनवाप्तभरवला ना पूर्वं ॥ ॥ त्रखातः ॥ ॥ ॥
 तनभाखाय ॥ ॐ सर्वावननवातान् चंदय १ हानचूजाकल्पयेंदंखादा ॥
 ॥ ॐ अमृतपाने ॥ ॐ धर्मसद्यधिकवधसर्वधयेंदंखादा ॥ ॥ प्रिवसु
 मदनल्लय ॥ वाक् ॥ यत्संगतंखादि ५ ॥ ॥ कारववमुवीय ॥ ॥
 दक्षिणसुचादुगु कलेभनल्लान ॥ नल्लतिक्क ॥ दत्तिलनलंप्रनयाय ॥ वाक् ॥

[illegible]

ॐ तिष्ठति च तूष्णीं कथं विधिः ॥

॥ वायुवायुसुची कलं जनस्तानां नृप

स्वानतिद्वे ॥ नासा कथं कन धलं प्रनयाय ॥ वा क ॥ मे दीय नाथ प्रमखवनः ॥

वाधिस्तवः गत्कीर्तिं गं यदि विद्वानविशुद्धसत्वाः निश्चिदाप्रतिमिनाः ॥

प्रह्वय ऊनानीः गत्संगलं रवकुम्भानि कनं गवा ॥

॥ प्रकापचा

नृप ॥ ॥ रावना ॥ खद्वदय अतिविश्वदवता वा नृचिद्वंः कलिममि

हृचिद्वं प्रमखगमद्य नृपः ॥ सुतनमिति विधयं लोकधर्मो कर्मधः प्रमखः ॥

प्रगममगलस्यदक्षप्रदद्यात् ॥

॥ मिर्किसिदुविय ॥ ॐ दं नान्सर्वव

ज्ञानाः ज्ञानलक्ष्मणमूर्त्तिर्माः नृणां वेषवधर्मैः त्रिदशैव प्रकिर्तिता ॥ सत्त्वार्थ
यक्रियानिर्णयः कर्तव्यस्तदादिविः यनयनदिगाधयः ब्रह्मत्वं समुपागतं ॥

॥ कुरुवतस्त्रिधागनचिया ॥ ॐ वज्रवन्धिवं ॥

॥ जीनाविय ॥ ॐ वज्र

धर्मद्वी ॥

॥ दहविय ॥ ॐ वज्रनक्षत्रं ॥

॥ त्रिचिद्रविष्णुवाविय ॥

कर्माः गिकामाकाविय ॥ वल्लिदेअपिष्टाय ॥ भित्तावाष्ट्रने ॥ मासकलकना

साक्षाः तिमित्तानगयकंगय ॥ ॥ मासकलक ॥ ॐ मर्दय ॥ सर्वपापमर्दय

स्वाहा ॥

॥ दाहापुदिनगमसं ॥ ॐ सर्वमहापनयं स्वाहा ॥

॥ लक्ष्म

अहहृतं नत्तु सिद्धनकं ॥ ॥ यत्तु सत्तु नदय ॥ आदुगियाय ॥ ॐ का धमः
जनयखादा ॥ ॥ ॐ मिहकमवर्तदभविधि ॥ ॥ नेमस्यभ
कोटकेलं भनस्तान ॥ ॐ कभविद्र ॥ पक्ववल्कल दत्तं पनयाय ॥ वाक ॥ आ
कषप्राभनिगल्लिहमद्युदहः नाकषनादिविविधार्थसूक्तमयुक्तः ॥
दावाध्यायं कदिविगितमनुसूयः गत्तं गत्तं रवतु अभिक्तं नगवाद्या ॥ ॥
पक्वपक्वानपूजा ॥ ॥ वाधिविह्लिद्रवाः सर्वः वृद्धाद्यध्वगाननाः वा
धिभलाः महाभलाः स्वर्गजिष्ठाध्वकस्मिन ॥ निह्वतावनिनामः सर्वसर्वे ॥ क

कावेदीः गथगाभमगाज्ञानैः दीचिचिर्ह ॐ निस्तुतः ॥ ॥ जापः ॐ धर्म
आगुगर्ह स्वाहा ॥ प्रक्वाप्रवानपूजा ॥ ॥ यक्ष अतत्रदयः ॥ आदुगियाय
॥ ॐ हूर्याग्नय स्वाहा ॥ ॥ ॐ नित्रुदमसमावलिविधिः ॥ ॥ आह्नम
वीढकलेभहलाना ॥ लाश्चातिद्रु ॥ आखहावनलेप्रनयाय ॥ वाक ॥ यक्षकुता
अवनमात्यसुगीतनृह्यैः यत्पुष्पधूपवनदीप्रविचिप्रगच्छेष्टपूजारि
नंप्रगिहर्मविमलंप्रगीतैः गत्संगलंरवतुगं प्रनमाहिषिकः ॥ ॥ निता
ऊन ॥ म५ गा५ सु५ ॥ ॥ नकवमुविद्या ॥ ॐ नकवमुद्यानदीरुप्रदी

स्वाहा॥ ॥ प्रायशः नाकिदावावाः सिवास्व॥ ॥ सिंघुनद्याय
स्वस्तिवाकन॥ ॥ सामानसाशान्दवहुमभुलः सतिद्रवीजाकननमि
निस्मिर्ग। दयान्ननागध्विगध४ प्रवृद्धयः कृतान्नूपप्रतिमांगकन्यका॥॥
वितावाविस्वार्यसूक्ष्मसूक्ष्मस्मनिः निपाद्यविस्वस्यदिवापपाश्वगशविवाह
यूक्ताष्टविस्वषूजावृत्तिः विध्वयपातिग्रहनभुमन्नुविन्॥ ॥ सना
वशः नायकनाहवालगयावपूजा॥ ॥ कस्वतनः चय॥ पक्षपचा
नपूजायाय॥ ॥ केनादानविय॥ वाक॥ ॥ ॐ यं सा सर्ववृद्धानाः स्तानता

कप्र हाकत्रि। गृहि त्वापाहिनाप्रातिः प्रातिवृद्धप्रकिर्तिना॥ यनसत्यनसं
हानैः प्रह्लापायात्मकमनुजैः। गनसत्यनसं नार्थः कामाख्यप्रतिपूत्रयः॥

॥ ॥ मातृकिनिद्याया॥ ॐ वज्राष्ट्रीषद्वंद्वरूपादा॥ ॥ अगवृद्धः

कानकाष्टायक॥ ॐ आश्वजिष्ठादश्विनस्य दार्द्रिं अथ ऊनग्रन्कीमाता
विशुद्धादा॥ ॥ अतिनिनत्याया॥ ॐ सर्ववृद्धवृजामतिवज्राष्ट्रीष

द्वंद्वरू॥ ॥ चक्रकाया॥ ॐ नमः सर्ववृद्धवाधिसत्वमाचय्येष्टावलि

त्वादा॥ ॥ हासागूरिनगात्मा॥ ॐ सर्वादासमनःसर्ल१त्वादा॥ ॥

यह मनुष्य का यकः॥ कूनप्रतिः स्वस्तिकः॥ म॥ न॥ ग॥ ह॥ द॥ तु॥ त्रि॥

सुखाः नया अ॥ यकः स्वस्तिकः वाक्॥

॥ प्रच्छेदकानयि वाक्

जीवनया सविद्य॥

॥ ऊ॥ प्र॥ अ॥ ध॥ प्र॥ अ॥ अ॥ प्र॥ अ॥ प्र॥ प्र॥

ता॥ अ॥ अ॥ अ॥

॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥

सुप्रतिस्ति नव अ॥ स्वाहा॥

॥ य॥ ध॥ म॥ त्यादि॥

॥ श्री॥ न॥ हा॥

॥ मा॥ हा॥ वाक्॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥

क॥ नु॥ दे॥ व॥ ग॥ स॥ व॥ वि॥ अ॥ जि॥ अ॥ ल॥ वा॥ य॥ व॥॥ या॥ व॥ त्म॥ न॥ हि॥ ना॥ द॥ वा॥ या॥ व॥ त्म॥

[illegible]

॥ ॥ देवनामालकयनाः देवनादू गियाय ॥ स्वस्ति वाक् ॥ ॐ जू नयया
दि x ॥ ॥ ॐ निते देवनादू गिविधि ॥ ॥ गती पूर्वकादू नी ॥ पूर्व
मिदय ॥ आ x धू x पा x आ x जू x धा x ॥ पं x पू x ला x ची x सु x ॥ द्या विदि
दय ॥ च नू दय ॥ समिध ॥ जू की दि पूर्व व नू रु दू या नू ॥ ॥ ॐ आ ४ स
नाधिरु लं जू स्वा दा ॥ का मि न ॥ ॥ ॐ आ ४ दं ग म आ र्ष नित ल क ४ वि रु द
प्र ल दं स्वा दा ॥ आ स्व ७ ॥ ॥ ॐ व ज वा स ण स्वा दा ॥ रु रु म का ॥ ॥
ॐ स पू ष्य स क ल व लं नं का वा का य पू र्णि क नू स्वा दा ॥ प नो त्य त ४ ॥ ॥

ॐ धर्मो धर्मो नारायणः परमं सर्वविघ्नप्रशान्तिकरं नमः ॥ वचनं ३४ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धनि ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दीप ॥ ॥ ॐ गगनगगनविलीनीकृतं नमो नारायणाय नमः ॥

दस्ता ॥ वास ॥ ॥ ॐ वक्तुं नमस्तु नमस्तु ॥ नमस्तु ॥ ॥ ॐ वक्तुं

प्रमत्तमाय नमस्तु ॥ प्रियं ॥ ॥ ॐ सर्वलोकप्रसन्ननाय नमस्तु ॥ सर्व

वधि ॥ ॥ ॐ सर्वकृष्णाय नमस्तु ॥ यक्षी प्रधि ॥ ॥

ॐ श्रीकायकननदीप्रसन्ननाय नमस्तु ॥ प्रियं ॥ ॥ ॐ श्रीरुतरुतनं ॥

ॐ ४ हूं स्वाहा॥ प्रिरुता॥ ॥ ॐ मदनाय स्वाहा॥ मदनरुता॥ ॥ ॐ व
ऊवसंक नाय स्वाहा॥ कंकम॥ ॥ ॐ सर्वनलाक नाय स्वाहा॥ भनपूष
॥ ॥ ॐ वऊवी जाय स्वाहा॥ समूक॥ ॥ ॐ सर्वकर्मकत्रिय स्वाहा॥
नागकंभन॥ ॥ ॐ वऊमदय हूं स्वाहा॥ पनकंभन॥ ॥ ॐ स्रपू
फं स्वाहा॥ पूनागरुल॥ ॥ ॐ दहू हूं रुद स्वाहा॥ भिजाय॥ ॥
ॐ पूर्विक नू स्वाहा॥ गुं गुल॥ ॥ ॐ समय आलय स्वाहा॥ अ गुल॥
॥ ॐ स्रसमय स्वाहा॥ कृष्ण गुल॥ ॥ ॐ कनिधनि सर्वसि

द्विक्रुद्रो स्वाहा॥ नक्रचगित॥

॥ॐ क्रुद्र सर्वकार्यसिद्धिभेदेवा

ये स्वाहा॥ नक्रचचन॥

॥ॐ वज्रदमनरुताय जूं स्वाहा॥ कीलोरुता॥

॥ॐ वज्रनृषा स्वाहा॥ वयसस॥

॥ॐ सर्वभारदाय स्वाहा॥ नृप

स्वान॥

॥ॐ वज्रायुध स्वाहा॥ दूर्वाकुत्र॥

॥ॐ वज्रदूर्वा हं॥ दूर्वा

॥

॥ॐ वज्रपिष्टकाय स्वाहा॥ पिष्टका॥

॥ॐ ज्ञा४ हं स्वाहा॥

कंधमूलादि॥

॥पूष्यानिपक्षोत्पत्तसंक्रुद्रया नृः पूजागपूष्या र्म

मनागपूष्यान्ः तम्रावगिजागिक्रुद्रानिकानिः क्रुद्रा रुमादि क्रुद्र

यानुसवडि॥ ॐ सर्वप्रथमतः ॐ आ४ र्दं रूद्रादा॥ प्रप्राधि॥ ॥
यनप्रतिउं प्रजा॥ गुनूप्रजादकिंसा॥ ऊऊमानधर्लदानकं॥ यनखान
कीज्वमानकंऊली॥ ॥द्याविदिद्वयप्रचनूद्वय॥ शिखाकनियाय
॥ ॥यनप्रकीयायना॥ अद्वालः प्रच्छुप्रका॥ चनामधिः समस्त
या३प्रकीयायना॥ द्याविदिद्वय॥ चनूद्वय॥ आकनियाय॥ महावाक॥
ॐ अद्यादि x॥ ॥मनु॥ ॐ आ४ हवाहक् हवाउऊ शिष्यानुऊरूं ह
ॐ आ४ रूद्र॥ ॥अननगुषिमावडिः हानवद्विप्रदीकयः अश्व

तादि किं नं गुरु गुरु कृत्वा मिव नो प्रति ॥ वृक्ष भक्त मंदं धनः विष्णु वायु म
हाबलः का मंदं वा दानि ज्येष्ठः चंद्र सूर्य न नं ग्रहा ॥ पृथिवि पा भधन ज्ये
ष्ठः कृत्वा नं क पन स्रुतः धर्म ना जाच ना गभः गन्धर्वा स्रुत कि न ना शा
प्राय द्वि भति दं वा ज्यः भूक निष्ठा निवा भनीः महा वा जाहि ना यं चः नि
र्वा न व भव लि हा ॥ निर्वा न नं नं दं वा ज्यः स्रुत वा ज्य प गभ स्रुतः मात्र नि
लाक धा गुरु ज्यः व भध गुरु निवा भति ॥ चतु दि प हि ना स्रुतः हि ना यं चः
द्वि धा गुरु कः ता क नं स्रुत ली का ज्यः न ना गुरु नं नं स्रुत दं वा ॥ स्रुति ना स्रु

मिह्लिगाऊचः विमलायाचमनिह्लिगाः साचवायाह्मनाह्मनाः धर्म
मद्यानूगमयेच॥ दूर्ध्वायायागनाध्वयः दूर्ध्वगमाध्वप्राणाध्वः प्रहाक
त्रिनिवाभनिः अरिभूरिवह्लिगासत्वासाधूमनिह्लिगायेचः दग्धमि
ध्वनस्तथाः जात्रागपूगलायेचः सम्वद्धाश्वकाश्चव॥ श्वजद्वकानन
पिनिः प्रगननकनंरुध्वः दवाश्वननरुद्रकाः प्रीतिगाहामविध्वनं
नः गंगामयह्ममहुत्तं॥ ॥ दानपति x ॥ स्वस्तिवाक x ॥ ॐ नमो
यदिपिदिपाविषाविषमहाश्वयद्वकवावाहनायकमानस्यः पूनं २६

[illegible]

नार्थः सर्वं भद्रं विहं क नार्थं सतर्गं कल्याण काम नार्थः पूर्णं २ पूर्णं कृति कृ
ह नद्रं स्वादा ॥ ॥ थन रुकुमान धर्तं दौक ॥ खान किं व गान के ॥
भिष्ठा दू गिया या ॥ द अ द कि ना दाय ॥ सर्वं क काय ॥ उ न प
ः सद की ना काय ॥ वा धं च य ॥ कल भ क काय ॥

पञ्चगव्यं च नयाय ॥ ननु ॥

पञ्चगव्यं च नयाय ॥ ननु ॥ ॐ ३ नमो च पवित्रं नमो कोनाकाय मथ गगा
याः ॥ दमो संन्यक्तं वृद्धाय ॥ ननु ॥ ॐ ३ स्वधने विविधधने रक्षिणि २ पुत्रसत्वे
महापद्मे ३ रुद्र ३ स्वाहा ॥ ॥ पूजा ॥ ॐ ३ रगवानग्रात्र नचाः राद्राः ऊयाः सोम्याक
पिताः पञ्चगव्यं माता रमा न काय ॥ ॥ रमा ॥ ॐ ३ ॥ चूप ॥ पागा ॥ चंग ॥ ऊऊ ॥ रमाना
नमः ॥ मगा ॥ चाला ॥ पूषा न्या ॥ ला ॥ ॐ ३ ॥ दाम्बा ॥ नय्य ॥ रुमि ॥ प्रतिदिनं च न
मालिनि सवर्तं पवित्रं दायकं ॥ नन्दा राद्रा ऊया सोम्या कपिलाय नननुनं ॥ ॥
रिषक विय ॥ नन्दा राद्रा ऊया सोम्या ॥ कपिला ॥ च पूजा पवित्रं ॥ तर्ष पाप विनासा
र्थं ॥ पूजार्थं पवित्रं यव ॥ महाकावृती का नार्थ ॥ दाम्बा न पञ्चगव्यं ॥ ॥
ॐ नमो रगवाना साक ननिदि पवित्रं च गगन रुद्रस्य संन्यक्तं वृद्धाय ॥ ननु ॥
ननि नूनि महा नूनि यत्वाहा ॥ साक नूनिदि पञ्चयाः पिकायं नयं ॥ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ लो न कल ग पूजा विधि ॥ ॥ मन्त्र स पीन
 वज्र विंश कल ग नय ॥ पीन पूष्य नय ॥ ॥ आप मन्त्र ॥ ॐ दं ग्रीं क्रौं अः ह
 स्वाहा ॥ धा ल १०८ ॥ स्व ता व शुद्धा नय ॥ आकर्षण ॥ धूप ॥ ध्यान ॥ ॐ स्व ता व शु
 द्धा सर्व धर्माः स्व ता व शुद्धा दः मणि निर्वं का नर्क पत्रि नर्क नाना नल मयै कल
 शी मा का नर्कः शुद्ध धर्मा दयान नल वि ता यः नय पत्रि सिंदु विष्णु क क
 र्त्त का यी च द्रु म उलः ॐ का नर्क पत्र शुचि क वज्र सं जार्गः वज्र पञ्च ल नि
 षर्त्त शुद्ध वर्त्त सूर्य प्र रं रू न ल क वृद्ध नल म कूट मणि नं क द विट पि

नविचिग्रनत्तातनक्षत्रधनः भक्तनृपः शानः पीतः नक्तः हनिनः चतुः
मूर्खं नृकृन्तुः प्रथमनुकाश्याः वक्तुवाध्यामीन्द्राधनः अपननुकाश्याः ध्या
नमृदाधनः हतियनुकाश्याः अक्षमालाः चक्रधनः चतुर्नुकाश्याः सत्रचापध
नं ॥ रागवर्नकगगदुर्नवं वाचनं विराचाः खलुद्विजमयखाकः ज्ञानस
त्वमानियपूजगादृक्षापाद्याचमनादिकं कृत्वा दद्यात्तु च समयसत्त्वप्रवेग्य
महात्रागनप्रविहयवाचिचित् नृपा मृतदरं चिन्तयेत् ॥ चिन्तयेत् समयद
वगाज्ञानदेवगा नृकं हगाचिन्तयेत् ॥ नगावजाभकीपूषामालान् पक्वस

वृत्तमद्यच्छासदितः वाममूषिना गृह्णित्वा ॥ ३ ॥ सर्वतथागतमहायोग्य
 त्रीदं ॥ ध्रुव ॥ ३ ॥ वृत्तयक्षदं ॥ ध्रुव ॥ आकर्षण ॥ ध्रुव ॥ पक्ष्मपक्ष्मपक्ष्म
 का ॥ पक्ष्मपक्ष्म ॥ ३ ॥ वृत्तध्रुवदं ॥ ३ ॥ सत्त्ववृत्तिदं ॥ ३ ॥ नल्लवृत्तिदं ॥ ३ ॥ धर्म
 वृत्तिदं ॥ ३ ॥ कर्मवृत्तिदं ॥ ३ ॥ ना ॥ ध्रुव ॥ वादनः नर्पदः मुनि ॥ ३ ॥ सर्व
 व्यापितवाग्रमः सुगमाधिपतिनः ॥ ध्रुव ॥ मल्लवृत्तिदं ॥ ३ ॥ वृत्तवृत्तिदं ॥ ३ ॥
 म ॥ धर्म ॥ ३ ॥ ॥ पूर्वसनीलवृत्तिदं ॥ कलभगतय ॥ पक्ष्मपक्ष्म
 गय ॥ नापमनु ॥ ३ ॥ वृत्तसत्त्वदं ॥ ध्रुव ॥ १०६ ॥ सत्त्ववृत्तिदं ॥ आकर्षण ॥

धूप॥ ध्यान॥ ॐ स्वताव शुद्धा सर्वधर्माः स्वताव शुद्धा र्कः मरि मिर्वका नई
पत्रिनं नाना नल मयंकल गं माका नईः शुद्ध धर्मा दया न नल विरा
वः नदूपत्रिग रुद्धा पत्रि विष्णु चंद्र कं का नई नीत पक्क स्रचिक वऊ
संलग्न वऊ पर्याक निषर्क सूर्य प्ररः दि ह ऊ क मूरवी सूर्यी गुल्या धिस्त प
क्क स्रचिक वऊ धृ त्याः ह पत्त मूरवा धर्नः वा म ह ह मूर लो न मूर सं रा ल्ला पि
नः सूर त सूर वृद्ध नल मकूट मलि नं ऊ टा विट पि नं विचि वृ नला रा न द
म व धर्नः वऊ स ल अक्षर्य विरा वः स्व हृ दि ऊ मयू खा क ली ज्ञान स ल

मानिय पूज गोदृष्टा पाद्या च मनादिकं कृत्वा दद्यात् रुच्य समय सत्व प्रव
श्व मदा नागान्द्र विरय वाधि चित् नूपा मृग हरं चिक यं ॥ विं कं
व समय देवता हान देवता न के हर गो चिक यं ॥ ५ सर्व नथ गत मदा
याग श्व नी कं ॥ धा ७ ॥ ५ वज्र य कं ॥ धा ३ ॥ आकर्ष वा ॥ धू पा ॥ पक्ष ॥
वा न पूजा ॥ पूषा न्या ॥ ५ वज्र सत्व कं ॥ ५ वज्र सत्व वजि य कं ॥ ५ वज्र
वा ऊः ऊ ॥ ५ वज्र वाग हा ॥ ५ वज्र साधू स ॥ वा श्वः स्रष्टा वादनः नय्य द
मुनि ॥ ५ नमस्ति वज्र सत्वा यः सर्व सत्व प्र श्व न कः ऊग द्रा धा य गुद्व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री धर्मो ॥

॥ दक्षिणसत्रलक्षिककालः ॥

नमः॥ हस्तलनमः॥ कापमनु॥ ॐ वज्रनलद्रो॥ स्वराशु दानमः॥ अकर्म
 ॥ धूप॥ ध्यान॥ ॐ स्वरावशु दानमः॥ स्वरावशु दानमः॥ सटिनिर्वकाव
 ॐ प्रविननं नानावज्रमयंकलमामाकावज्रं शुद्धधर्मदयानवहं विराज
 : नदप्रविज्जुष्वपुष्टविज्जुष्वपुष्टमल्लग्रीकावज्रं वज्रं किमवज्रसंखनं व
 ॐ पर्यंकसह्यापिगवर्कस्यप्रतः सूनत्यक्वद्वनलमकूटमहिर्गः क
 ॐ विटपिर्गः विचिप्रनलातनमम्वनधनः द्विभुक्तकमूरुः सखनवज्रं

किं न तलम धर्मं गु ल्या धृ त्वा व न दा हि न य क र्च नः वा म मूर्त्ति न मूर्त्ति ग ह
 ला प्र य नः व ज न ला र्थं न ल सं र वं वि ला यः स्व दृ द्वि उ म य र्वा क ले द्वा
 न स त्व मा नि य प न ग दृ द्वा पा श्वा च म ना दि कं कृ त्वा द श्वा ल च स म य स त्व
 प्र यं श्व म हा ना ल न द्र वि ह य वा चि चि ल नू पा मृ ग ह नं चि न यं ॥ चिं क
 च स म य दं व ग ह न दं व ग न कं ह ग चि न यं ॥ ॐ सर्व ग थ ग न म हा
 यो हा श्व त्री कं ॥ धा त ७ ॥ ॐ व ज य क र्च नं ॥ धा ३ ॥ ओ क र्ष व ॥ धू पा ॥ प ह
 क्वा प चा न प र्जा ॥ पू षा न्या स ॥ ॐ व ज न ल यो ॥ ॐ व ज न लं ॥ ॐ व ज नं ॥ ॐ ॥

ॐ वज्रकंठुर्गो ॥ ॐ वज्रहासहो ॥ वाग्ध्याः घञ्जवादनः गर्प्यनः सुति ॥ ॐ वज्र
 त्रसहावीर्यः सर्वयक्षाधिपप्रताः धनधान्यप्रदाता चः नलभयनमान
 नः ॥ यधर्मा ५ ॥ ॥ पञ्चिमसयनविद्वक्कलभतया ॥ पञ्चमृगन
 य ॥ आपमनु ॥ ॐ वज्रधर्मद्वी ॥ १०८ ॥ स्वराशुद्धागया ॥ आकर्षिता ॥ धूप ॥
 धाना ॥ ॐ स्वरावशुद्धासर्वधर्माः स्वरावशुद्धाद्वैः मण्डिनिर्वकात्रकंप्रतिनः
 गं नानात्रलमयंकलभं माकात्रकं शुद्धधर्मादयागत्रहं वितायैः नदप्रति
 मयूनाप्रतिविष्मकचयमकुलैर्द्वीकालनिष्पन्नभूमिगार्हवज्रपर्यंक

हं ध्यानमूढासंस्कारावकवर्कसूर्याप्रतीरुनत्यक्वृद्धनलमकूटमणि
नःऊटाविटपिनंविचिप्रनलीवनधनःदिनुकेकमूरुउलानवामननकः
नावृत्संगस्काराःसवामध्मीगुत्यावजांकःपद्मंधत्वाकृगध्यानमूढाधर्म
विविहायःस्वद्विऊमयूरवीकशेहानसत्वमानियपूनगादृक्षापाशा
चमनादिकंकृत्वादद्यालच्चसमयसत्वप्रयश्चमदावागदविहयवी
चिचिलनूपाभृगदरंचिनयं॥चिक्कचसमयदवताहानदवतानुके
दगाचिनयं॥ॐ सर्वगथागनमदायागश्चनिदं॥ध्या७॥ॐ वज्रयक्ष

कलभमाकात्रकं शुक्रधर्मादयानत्रहं विहायः तदप्रतिगन्तुं अप्रतिवि
श्रुतचन्द्रमण्डलैः अकात्रकं विश्ववर्जं संहारंः अमाद्यसिद्धिवर्जपर्याका
निषर्कं अमवर्कं सूर्याप्रहं ह्यनपक्ववर्जं नलमकटमहिर्गः ऊटाविटः
पिर्गं विचित्रनलारत्रक्षम्वत्रधर्नः द्विभुजैकमुखः सूर्यानविश्ववर्जं मध्या
गुल्यां धृत्वा रायदानारिनयर्कं वाममुखानमुखं संहारप्रयर्कः कर्मवर्जं
विहायः स्वद्विभुजमयूर्वाकले ज्ञानसत्त्वमानियपूजनादृद्धापाद्याच
मनादिकं कृत्वा दद्यात्तच्च समयसत्त्वप्रव्यश्चः महाबाहो ब्रह्मविहयवी

चिचिरु नूपा मृग रुमंति नयन् ॥ विंक्षु च स मय दं वना हान दं वना न के रुगा
 चि नयन् ॥ ॐ सर्व न था गग म हा या हा ध्वनी दं ॥ धा स ॥ ॐ व ऊ य रु दं ॥ धा
 श ॥ आ का ष ट ॥ धू प ॥ प्र ल्हा प चा न पू ज ॥ प्र ष्ण ना ॥ ॐ व ऊ क र्म जूं ॥ ॐ क
 र्म व ऊ कैं ॥ ॐ व ऊ न रु दं ॥ ॐ व ऊ य रु दं ॥ ॐ व ऊ संचि वं ॥ ना आः च ष्ट
 वा द नः न ष्ट हः सु गि ॥ ॐ क र्म व ऊ म हा व ऊः सर्व क र्म प्र सा ध काः सर्व सि
 द्वि प्र दा ना र्थः ॐ मा च सि द्वि न म सु गं ॥ य ध र्मा ॥ ॥ आ र न स ना आ
 विंक्षु क त भ ग या ॥ आ व हा म न या ॥ जा प म न ॥ ॐ व ऊ ना आ दं रु द् स्वा द

॥ १०८ ॥ स्वरावशुद्धागया ॥ आकर्षणधूपाध्वाना ॥ स्वरावशुद्धासर्व
धर्माः स्वरावशुद्धादः मटिगितं का न ऊं पत्रिनं नाना न ल म यं क ल भ
माका न ऊं शुद्ध धर्मादया न प्रहं विरायः न दू पत्रि विष्णु च द्र विष्णु दं
का न ऊं व ऊं द यं स र गं स त्व प्र यं कानी ष र्क स र्य प्र ता न ल म क टि नि वि वि
प्र न ता र न क्ष म्ब न ध र्मः दि नु ऊं क म्ब र्वः व ऊं ग र्व म्ब द या नु ऊं र यी व ऊं द यं
वि न गि व ऊं ना श्वी वि रा यः स्व द्वा द्वि ऊं म यूर वा क लो हान स त्व मानि य पू न ग
दृक्वा पा शा च म ना दि कं कृ त्वा द शा रु च स म य स त्व प्र वं श्व म द्वा ना रा द ह

प्रविहय वाचि चिर नूपा नृन रुम चिं न यं नू ॥ चिं क व स म य द व न ः न ह
द व न नू के रु न ः चि न यं नू ॥ ॐ सर्व न थ ग न म द णा ग ष्व नी दू ॥ धा ७ ॥
ॐ व ऊ य क दू ॥ धा ३ ॥ आ के र्थ णा ॥ धू प ॥ य स्त ण च व पू णा ॥ पू ष्य ग्रा णा ॥
ॐ व ऊ न ण दू ॥ ॐ व ऊ म ण दू ॥ ॐ व ऊ गी न दू ॥ ॐ व ऊ नृ ण ॥ ॐ व ऊ
पू ष्य दू ॥ ॐ व ऊ धू प दू ॥ ॐ व ऊ व ली कि न दू ॥ ॐ व ऊ ग ल्प ॥ न णा इ
ध णा वा द नः न ण नः मु नि ॥ ॐ व ऊ न ण म द णा गी नः सर्व ती ली प द र्भ कः व
ऊ म ण म द णा म णाः नृ णा व ऊ न म ण मु नि ॥ यं ध र्मा ५ ॥ ॥ नै म ण स र्ज

कृष्णचिंद्रकलभगवत् ॥ प्रचरव नय ॥ जापमन्त्र ॥ ॐ वज्रं कृष्णं कः कर्तव्यं
 हो स्वाहा ॥ धातु १०८ ॥ स्वराशुद्धागया ॥ आकर्षे ह ॥ धूप ॥ ध्यान ॥ ॐ स्वराव
 शुद्धासर्वधर्माः स्वरावशुद्धादंः मरिचिर्वकात्रकं पत्रिनर् नानात्रलमयं
 कलभं माकात्रकं शुद्धधर्मादयानत्रलं विरायः नदूपत्रिविष्मकच
 द्विविष्मककात्रकं कृष्णसंलग्नः सत्वपर्याका निर्वर्त्तमानवर्त्तः सूर्यप्र
 नलमकूटीनैविविप्रनलावत्रधर्तः द्विभुक्तकमखः शुद्धाख्यां जं कृष्णधर्त
 वज्रं कृष्णं विरायः स्वद्विभुक्तमयूरवां कृष्णं हानसत्वमानियपत्रगादृष्टा

पाशाचमनादिकं कृत्वा दद्यात् सप्तमय सत्त्वप्रवृत्तिं मदा जगत्तद्विह
यवाच्चिचित् तन्मूपा मृतं हनं चिन्मयं ॥ चिं कंच सप्तमय देवता हान देवता
नृकं हनं चिन्मयं ॥ ॐ सर्वं गथागतं महायाता श्वनी देवं ॥ ध्यातुं ॥ ॐ व
ज्रयुक्तं ॥ ध्यातुं ॥ ॐ आकर्षणं ॥ धूपं ॥ प्रक्षुद्रं च त्रिपुण्ड्रं ॥ पूष्यं न्यामं ॥
ॐ वज्रं कृष्णं ॥ ॐ वज्रं पाशं ॥ ॐ वज्रं स्फुरन् ॥ ॐ वज्रं वंशं ॥ वाग्म्यः च ध्या
ता दनः गर्प्यः सुगि ॥ ॐ वज्रं कृष्णं महावीर्यं ॥ देवमानप्रमर्दनः सर्वभूतहृ
र्वैवदेः सर्वं हानं तस्यै ॥ यंधर्मा ॥ ॥ वायुं च सत्त्वप्रधानं चिं

ककलभगया॥ नाभत्रिकंगया॥ जापमनु॥ ॐ मेघे हननयदं रुद्रा
 हा॥ धल१०६॥ स्वराशुजागया॥ आकर्षण॥ धूप॥ ध्यान॥ ॐ स्वरावशुजा
 सर्वधर्मास्वरावशुजादं॥ मदिगिर्वकात्रकंपनिननं नानात्रलमयंक
 लभं माकात्रकं॥ शुक्रधर्मादयागत्रहं विरायः तदपनिविश्वकं विश्व
 पक्षापनिचदमभुलंदं कात्रकं सपञ्चर्वनागपूष्पसंज्ञां सत्वपर्यंक
 पीतवर्कसूर्यप्रहं नलमकुटिनं विविग्रनलारनलम्वनधनः दिनुकं
 कभूस्वः सद्यनागपूष्पः वाभकुडिकाधनः मेघेयं विरायः स्वद्विजम

यूखाकुरे हानसुखमानियपूजनापृष्ठापाशाचमनादिकं कृत्वा दद्यात्
लुचसमयसुखप्रवृत्तमहा नागद्वयविद्वयकचिचिलनूपासु न
द्वर्गचिन्तयन् ॥ चिंक्षुचसमयदेवता हानदेवता नृकैर्द्वगाचिन्तयन्
॥ ॐ सर्वगथागममहायागश्वरीदं ॥ धातु ॥ ॐ वज्रयुक्तं ॥ धातु ॥ आ
कर्षण ॥ धूप ॥ प्रक्षुप्रचानपूजा ॥ पूषा न्या ॥ ॐ मेघीद्वनक्षयदं स्वाहा
॥ ॐ नृमीघपाशदग्निनदं स्वाहा ॥ ॐ सर्वपापशुद्धिस्तु सर्वपापविनाशधनि
दं ॥ ॐ सर्वभक्तनिर्घातनमोदं ॥ ॐ गन्धहस्तिनदं ॥ ॐ सुनीगमदं ॥

ॐ स्वाहा ॥ ध्यात १०८ ॥ स्वता शुद्धा गय ॥ आकर्षण ॥ धूप ॥ ध्यान ॥ ॐ स्वता
व शुद्धा सर्वधर्माः स्वता व शुद्धा दैः ॥ मति निर्वका नर्त पत्रिन नाना नाना नाना
मयंकलर्गमाका नर्त शुद्धा धर्मा दयाग नर्त विहायः नदन तावय ली
ग्रीमलुल चय आकर्षणः विनायकं उग नार्थः सर्वहं कनू लक्षिणी ॥ वा ना
गिनीया किमि मन्त्र मन्त्र वनिः शुद्धा शुद्धि निर्मल शुद्धा मुनि मलुल लक्षि
आहु नीव नग को पत्रि नल कूटः सिद्धा भन विजय न मुनि ग्ग क सिद्धा ॥
वाला क ह म भग पाक निरे नव कः वजा भ नी दिनु उ मुद्रि न धर्म च

[illegible]

यदंरुद्र॥ॐ क्षितिगहादया श्री वायदंरुद्र॥ॐ सनिगहादया श्री वा
यदंरुद्र॥ॐ अविगहादया श्री वायदंरुद्र॥ॐ नकागहादया श्री वा
यदंरुद्र॥ॐ द्रुद्रहि श्ववदया श्री वायदंरुद्र॥ वाग्धः च धावादनः ग
धनः मुनि॥ॐ नमस्तुभ्यं कर्हिं हाय धर्म चक्र प्रवर्तकै धागु कडाग
सर्वः एव धय सर्वदूर्ज निनु॥ सगा दन॥ ये धर्माः ४॥ ॥ॐ नि श्री ह
मानकलभ पूजा विधि समाप्तम्॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यदं



प्रीतमसुखपूजा

१ प्रीतमसुखपूजा ॥ ॥ नागयाध्याना ॥ र्यकावादिचतुर्वीर्यैः वंकागाहवमहुलं
ॐ आ ४ र्कं कावसं जातः प्रिगत्वमहुलाकृमिशर्वकावैव नूतं शुक्रैः शुद्धिदिवा
शुक्रपिनैः मनूष्यास्यसमूहैः सफरुना नलैकैः दिवालीकावतुल्यैः
विचित्रास्वनाध्यानिहै ॥ चक्रगाजागथासंखैः द्वादशैः ध्यानिहैः रावयैः
महुलं मध्याः चतुर्दिगसमना ॥ १ ॥ पूर्वैकाशुकिस्विनैः वनदं नलपा
नयाः दिवा नूपस्व नूपैः नवरुणासुसाहिना ॥ २ ॥ दक्षिणैः नैका
नकाः पक्षैः नानलैकैः द्वादशैः वामैः नलपुकाभिग ॥

॥ ३ ॥ प्रश्निभद्विगककर्मः सफरुनासुद्यादिर्गः ललितं दक्षिणं दक्षिणं
धननी नलमं श्रीलीला ४ ॥ ३ ॥ लपपपनागः ध्रुवनीलं च वेर्किर्गः ॥
तयनलघटल्लेवः प्रिरुनासुहमरिर्गः ॥ चतुर्दिर्गं चतुर्हीनः चतुर्नानदम
तुर्लीः चत्वात्रा निधि सल्लानः तावय विधि पूजयन् ॥ ५ ॥ पादार्च ॥ प्र
क्षपवानपूजा ॥ ॥ पूषा न्या ॥ ॥ ॐ ॥ श्री ४ वे जीतना हवं वज्र वृक्ष
यवज्जपि प्रमिच्छ स्वाहा ॥ ॐ ॥ वी जीह वायवज्जपि प्रमिच्छ स्वाहा ॥ ॐ ॥ श्री ४ व
ज्र वृक्ष यवज्जपि प्रमिच्छ स्वाहा ॥ ॐ ॥ वां वा शुकाय वज्जपि प्रमिच्छ स्वा

हा॥ॐ नमः कायवज्रपूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥ॐ कंकर्क कायवज्रपूष्पप्र
तिष्ठ स्वाहा॥ॐ पंपनायवज्रपूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥ॐ दं दं नृ नृ नागनाकाय
वज्रपूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥यूनिपूर्वम्॥ ॥ॐ सं महापद्मनागनाकायवज्र
पूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥ॐ कंकर्क नागनाकायवज्रपूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥ॐ
ॐ श्रीरत्ननागनाकायवज्रपूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥ॐ वं वं प्रह नागनाका
यवज्रपूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥ॐ वं वं नागनाकायवज्रपूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा
॥ॐ हूं सूर्यप्रह नागनाकायवज्रपूष्पप्रतिष्ठ स्वाहा॥ॐ ॐ म न वा दू ना

[illegible]

॥ ॐ हं ग ह य जि क्का नाग वा जाय व ऊ पूर्णं प्रणि च्छ स्वाहा ॥ ॐ न न च न धा
ग वा जाय व ऊ पूर्णं प्रणि च्छ स्वाहा ॥ ॐ हं ह मू द पू न नाग वा जाय व ऊ पूर्णं प्रणि
च्छ स्वाहा ॥ ॐ वं व र्द्ध न नाग वा जाय व ऊ पूर्णं प्रणि च्छ स्वाहा ॥ ॐ म द न च नाग वा
जाय व ऊ पूर्णं प्रणि च्छ स्वाहा ॥ ॐ हा ग न न च नाग वा जाय व ऊ पूर्णं प्रणि च्छ स्वाहा ॥
ॐ कूं कूं ल न च नाग वा जाय व ऊ पूर्णं प्रणि च्छ स्वाहा ॥ ॐ जूं जूं न ध न च नाग वा
जाय व ऊ पूर्णं प्रणि च्छ स्वाहा ॥ धू मि द दि र्हा ॥ ॥ ना म्हाः च ह्वा वा द नः ग ह
र्ष हः सु मि ॥ व द्री म नाग व न मः तु ल म्हा न नू र्पः न ल प्र हा व क ल पूः ष्य ऊ ला

[illegible]

॥ ॥ दभके मया सि

इति श्री श्रीगणेशाय नमः

[illegible]

॥ १ ॥ जाप x विदि x च नू x आ दू x ॥ कर्म कथा नामः नक्षत्रवर्किः सुदिप्र
काशः लोहदिपाददहशकृपा दवकीः शुद्धदहकृतीः नत्राष्टिमाताः कपिः
लोहकर्म ॥ ॐ उपचा गायत्री स्वाहा ॥ २ ॥ जाप x विदि x च नू x आ दू x ॥
प्रगाह नामाग्निहृ ग्गनामूर्तिः हृपागलागः नप्रमाहकात्रिः विभुद्धसीजा
यगचात्रनर्गः ऊगाप्रवत्सकासननलोसि ॥ विचिप्रवम्नाः हनक्षचकदः ॥
ऊनलीलाह्यदवदगथा ॥ मलेप्रिकासः ववत्सप्रदायीनः प्रिदहकृती
प्रहसह्यवर्कु ॥ ॐ प्रगाहागय स्वाहा ॥ ५ ॥ जाप x विदि x च नू x आ दू

[illegible]

कमल ५









मप्रवन्धाः यक्षपवीतः कृत्तुद्वन्द्वः सत्त्वपूर्वमश्यामश्वपूर्वविर्हः ॥ ३ ॥ सत्त्वः
यस्यादा ॥ ३ ॥ आपः विदिः चतुः आदः ॥ कलभननकगहीः काम
नामाग्निगीर्हः ननुतदिनकवारः नकहषास्वर्गगशाप्रथमकनयुग्मग्र
दहुकाष्टाङ्गमक्षः नदिननुरुयुग्मः पाभकृतीदध्वनः ॥ ननुतमध्वनशु
भ्रः प्रकृतीताहुनागभवद्वनकृत्तुपैः दीप्रमोतिमिन्नर्हः ॥ त्रिभुवनकन
तानीः सौख्यमावदयानाः वसुकनक्षविधानः धीवलीलाप्रवृद्धः ॥ ३ ॥ सत्त्वः
वाग्नेयस्यादा ॥ ७ ॥ आपः विदिः चतुः आदः ॥ काध्वननीमदावाह

गीः ख आ पा आ क वि कु माः मृ लु मा ला वि रु ष केः य व संह न ती ष ही ॥ ॐ क्री
 धा न यं स्वा हा ॥ ८ ॥ जा प x वि दि x च नू x ॥ आ दू x ॥ संध्या रा ग मः नू हो
 ला दि गा निः ना ग नू ना ग प्र च न स्व रा वाः ॐ ग न ह षा च न ह ष न थाः ऊ पा
 रु मा रु त्रि वि षा ल नं द्रं ॥ अ र्क सि ण्ड क पू षा दिः दु व्य क ल्पा दि न ॐ ऊ नू । ख
 ज ह ला न क्ष र ॐ क उ क र्म प्र र दि न ॐ ॐ सूर्या न यं स्वा हा ॥ ९ ॥ जा प x
 वि दि x च नू x आ दू x ॥ प्र मा दू ना ना म सु आ ना म र्तिः सु पा न ला रु न प्र मा दू
 का लि । वि ण्ड क सो द्या न च नू नं द्रंः ऊ ना प्र व स्था क ल न ल मो लि ॥ वि चि त्र ह

वस्तुतः नक्षत्रकचः शृङ्गावलीलास्पदपद्मगङ्गाः गते त्रिका सर्ववत्प्रदा
यीः प्रियदुक्ते हीप्रदसह्यवर्क ॥ ॐ यात्रकाग्नये स्वाहा ॥ १० ॥

धनप्रवृत्तिरिषिक ४ दशरिखेकं ताने ॥ ॥ कपालसकलमदिवकावत्सं

खहायकं ॥ वाक् ॥ यत्संगं सकलसत्त्वद्विहितस्यः सर्वात्मकस्य वत्सर्व

कलाधिपत्याः निःशेषसत्त्वजनकस्य महासूखस्यः तत्सङ्गं सत्त्वतु न पत्र

मातिषिकः ॥ ॥ ॐ मि उदकातिषिक ॥ ॥ यनामकर्तव्यकं ॥ वाक् ॥

ॐ दनात् सर्ववृद्धानां प्रिधातुर्कं नमस्तुतः यूपार्कं पूजनाथयः सकृत्प

ॐ क्लीं ह्रुं ॥ सर्ववृद्धं गमयिष्ये मन्त्रकं प्रतिष्ठे ॥ ॐ नमो
कारिष्ये ॥ ॥ धनकपालं भक्तकामकामय ॥ वाक् ॥ ॐ दं दं दं दं ॥ ॐ
ॐ नमो कारिष्ये ॥ ॥ धनवत्तुं जानकं नय ॥ वाक् ॥ नमो कारिष्ये
मन्त्रकः वज्राकारिष्ये ॥ ॐ दं नमो सर्ववृद्धं ॥ गुरुवत्तुं नमो सिद्धय ॥ ॥ ॐ नमो
वज्राकारिष्ये ॥ ॥ धनद्युक्तं जानकं नय ॥ वाक् ॥ वज्राधिपतिह्वाः मति
षिक्कामिनिष्ठवत्तुं समयसुखदा ॥ वज्रद्युक्तं नमो नमो ॥ ॐ नमो द्युक्तकारिष्ये ॥
॥ ॥ धनकपालं भक्तकामकामय ॥ वाक् ॥ ॐ वज्रसुखमतिषिक्कामिनिः व

ऊ नामाहिषिकेन ४६ आत्रुमूक नामगथागत दूर्तवत्त्वा ॥ ॐ नित नामाहिषि
क ॥ ॥ यनत्राचार्याहिषिकविद्या ॥ ॥ वज्रघटकीनकंगया ॥ वाक्
॥ वज्राचार्याहिषिकेताः नम्रुं दसि कृपातिष्ठः स्वपार्थसमर्थत्वाः यनादुत्वं
प्रसादत ॥ ॐ नित आचार्याहिषिक ॥ ॥ यनवज्रककीनकंगया ॥ वाक् ॥ ॐ
नादिनिधनं सत्त्वः वज्रसत्त्वमहात्रय ४ समनरुद्रसर्वात्माः वज्रगहाप्रतिप्रणि ॥
॥ यनघटकीनकंगया ॥ वाक् ॥ ॐ यं सा सर्ववृद्धानाः घटकीन
नूगमस्तृणाः त्वयिप्रिदि सदाध्यायाः वाचिनागमजिनंस्तृणा ॥ ॥ दूर्तव

ॐ च छ कोन के मूद्रा या च के न या ॥ वा क ॥ मूद्रा ही समय प्रा के : मन मूर्ति द
दृ त न : सर्व मूर्ति दृ दृ त न : सर्व मूर्ति दृ दृ य न : न न मूद्रा प्र कि लि ना ॥ ॐ ॥
ति क्षान मूद्रा ॥ ॥ थ न समय मूद्रा च छ था य के ॥ वा क ॥ व ड स ले न संग्र
क : च छ ध म ह वा द न : समय न म ह मूद्रा मूद्रा चि छ दृ दृ यि ड प्र न ॥ ॐ
ति समय मूद्रा ॥ ॥ थ न व ड च छ हिल स न य के ॥ वा क ॥ ॐ हू प्र नि
वि न व ड ह वा द ॥ ॥ द न न्ना लिंग ना मूद्रा या च के न या ॥ वा क ॥ पा वि
ह्यी नु स मा लिङ्ग : प्र ह व धा द ॥ ॐ दि का ॥ च छ व ड स मा या ग ४ आ वा र्य ह

वनं मनः॥

॥ ईति आचार्यादि श्रवण ॥



१००० बुकेल आदि पूजा ॥ ॥ ज्ञाप ॥ धूप ॥ ध्यान ॥ नेत्रावत समानुद्धः सदग्रं
 दिवि सात्रदाः ॐ बुनीलप्रता शुद्धः मकर मनित्राकिर्न ॥ पीतवर्ण मदानं
 ललितासनसहिताः नीलायनकनाहसिः गहि ॐ दायनं नमः ॥ पात्र
 नृप्रोप ॥ पूषाया ॥ ॐ ह्रनाचिपनयस्वादा ॥ ॐ नन्दनायस्वादा ॥ ॐ ॐ द
 यस्वादा ॥ ॐ वज्रह्यदिग्गि २ वज्रपानयस्वादा ॥ ॐ वज्रपाहस्वादा ॥ ॥

नाम्ना॥ गणेश॥ सुनि॥ ॐ द्रुह्नपति स्तेवः वज्रहस्तमहावलः भगवत्
हृदि प्रोदवः नमो ॐ द्रायनं नमः ॥ १ ॥ ॥ अह्नम॥ ज्ञाप॥ धूप॥ ध्या
न॥ नृजगं कलिगंददंः प्रिनशो उर्द्धकं गिताः प्रिताम्वनामहा नं ज्ञाः श्री हं
धका ननाभीना॥ नक नली नृगनयनः ध्यानपूर्व्यं नमो सुगं॥ पञ्च x प
x ॥ ॐ नृद्वि कपिल के नं नृद्वि गिरि गालि विनूपा रुखादा ॥ ॐ अह्न स्वा
दा ॥ ॐ कलि नाय स्वादा ॥ ॐ कलं कालय स्वादा ॥ ॐ प्रीताम्वनाय स्वादा ॥ ॥
नाम्ना॥ गणेश॥ सुनि॥ प्रीतवर्कमहा नं ज्ञाः शुभापात्रक नधृगंः वामे कमल

ब्रह्मर्यः नृजासनममोमुता ॥ २ ॥ ॥ दक्षीणस ॥ जाप ॥ धूप ॥ ध्यान ॥
धर्मनाकासदावीलाः नीलवर्कप्रताकनाः सकपनीलकमिन्याः वीष्मताध
र्मताजनी ॥ यमदुधुतादुक्तः ध्यानपूर्वममोमुता ॥ पा x नृ x नृ x प्रा x पं x
पू x ॥ ॐ यमाय स्वादा ॥ ॐ पितृपते स्वादा ॥ ॐ दधुधनाय स्वादा ॥ ॐ धर्मनाकाय
स्वादा ॥ ॐ नीलवर्कय स्वादा ॥ ॥ नमो ॥ नमो ॥ मुनि ॥ नीलवर्कमदा
कायः मदीषापनिहलीनः यमदुधुकेन धार्यः कृताकनमोमुता ॥ ३ ॥
॥ नमो ॥ नमो ॥ जाप ॥ धूप ॥ ध्यान ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥

नकाःपिंगलाकंहरिमन्त्रःकीकालेकनिर्वाणका॥स्वयंकेपालहस्तःध्या
नपूर्वांनमोस्तुते॥ पा x न्ना x न्न x प्री x पं x पू x ॥ ॐ सर्वरुग्तर्यंकवायस्वाहा
॥ ॐ नमोस्वायस्वाहा ॥ ॐ नमोस्वायस्वाहा ॥ ॐ वीकृणाननायस्वाहा ॥ ॐ निहाह
ववायस्वाहा ॥ ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥ नमो ॥
रुन्ननरुषिर्गःस्वयंकेपालधर्मवीरःप्रणवूटंनमोस्तुते॥ ४ ॥ ॥
पश्चिम ॥ जाप ॥ धूप ॥ ध्यान ॥ वंदन ॥ वन्दन ॥ वन्दन ॥ वन्दन ॥ वन्दन ॥ वन्दन ॥ वन्दन ॥ वन्दन ॥
महिनैल्लहर्गीधर्मःसर्वेनन्नरुह्यप्रदा ॥ वन्दन ॥ नागनाकायःध्यानपूर्वः

नमोभुक्तं॥ पा x आ x त्र x प्र x प x ॐ ह ह प प्र ह ह शिखितालिविबूपा
कृष्णादा॥ ॐ व नू क्ष य स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ कलदापय स्वादा॥
ॐ सागनाय स्वादा॥ ॥ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥
नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥
यमा॥ जाप॥ धूप॥ ध्वाना॥ मृगध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥
त्रिगवर्कसंशुद्धः महावलपनाक्रमा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥
भुक्तं॥ पा x आ x त्र x प्र x प x ॐ ह ह प प्र ह ह शिखितालिविबूपा
कृष्णादा॥ ॐ व नू क्ष य स्वादा॥ ॐ नागध्विपतय स्वादा॥ ॐ कलदापय स्वादा॥ ॐ सागनाय स्वादा॥

हा॥ॐ वायुवा स्वाहा॥ॐ वपत्राय स्वाहा॥ॐ चक्रलाय स्वाहा॥॥ ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ मुनि॥ प्रगदस्तु कपूनाहः॥ ॐ नमः दं मदावलं॥ चक्रलं चपनंदं॥
 मृगमनूटं नमामुनी॥ ॐ ॥ ॥ उरुनमः॥ ज्ञाप॥ धूप॥ ध्यान॥ यक्षाधि
 पामदाः॥ आताः॥ हूललम्यादनागनाः॥ पीतवर्कस्यप्रचः॥ नववरुनधमिनी॥
 मकूट॥ अरिनाकः॥ ध्यानपूषं नमामुनी॥ पा॥ x नमः॥ x नमः॥ x प्री॥ x पं॥ x पू॥ x॥ ॐ
 कृष्णाय स्वाहा॥ॐ धनमाय स्वाहा॥ॐ यक्षाधिपतय स्वाहा॥ॐ उरुनाय
 स्वाहा॥ॐ काचनप्रहाय स्वाहा॥ ॥ नमः॥ नमः॥ मुनि॥ हूलल

कायमहागङ्गाः कालकाञ्चनसन्निहः त्रैलोक्यवृद्धप्रदं निहः कथं वायव्यमीश्वरी ॥

७ ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ गङ्गा ॥ धूप ॥ ध्यान ॥ त्रिभूतपानिध्यानाः ॥ ॐ नमः ॥

अत्रहिताः वृषावृद्धाविभवं दीः कृताकृतापिनेष्टकाः त्रैलोक्यवृद्धावृद्धाकृता

ध्यानपूर्वपुनर्मौक्त्या ॥ पा x त्रा x त्र x धा x पं x पू x ॥ ॐ कूं कूं कूं शिवस्वाहा ॥ ॐ

ॐ नमः ॥ ॐ स्वप्नपानेस्वाहा ॥ ॐ त्रैलोक्यस्वाहा ॥ ॐ हृन्नाधिपतयस्वाहा

हा ॥ ॥ नमः ॥ नमः ॥ मुनि ॥ शुक्रवर्कमहागङ्गाः त्रिभूतलक्षकपालकं

सदाकल्याणकालिखः त्रिपुनानाकनमौक्त्या ॥ ८ ॥ ॥ ॐ स्वाहा ॥ गङ्गा

॥ धूप ॥ ध्यान ॥ मानसि माविका ह्यमहाः प्रीताम्बरावीश्वरदाः वन्ददा नृकमा
ताक्कः कमलुत्तपिदुकाः वेदावाचाचतुर्वेदाः ब्रह्मलक्ष्मणपूषा नमो मु
नो ॥ पा x आ x अ x प्र x प x ॥ ॐ वन्दने स्वाहा ॥ ॐ पूजादिनाय स्वाहा ॥ ॐ
ॐ श्रद्धाय स्वाहा ॥ ॐ वेदकर्त्ताय स्वाहा ॥ ॐ प्रीताम्बराय स्वाहा ॥ ॥ नमो
नमो नमो ॥ मुनि ॥ ॐ ब्रह्मा प्रीतवर्त्तः चतुर्वेदतुपा नगः कमलुत्तपिदुकाः
क्कः हंसासननमो मुनो ॥ २ ॥ ॥ सुखाभाजापा धूप ॥ ध्यान ॥ दिनक
नमो नमो सिः पद्मध्वनिप्रहाकविः सफाभवनमानूदः विभविगुडवाचनी

ऊगगहृखप्रदागावःसुनहृयायनंनमः॥ पा x आ x नू x प्री x पं x पू x ॥ ॐ
 हृयायनमः॥ ॐ हृयायनमः॥ ॐ दिननाथायनमः॥ ॐ विकागित्तनमः
 ॥ ॐ ग्रहाधिपतयनमः॥ ॥ नमः॥ नमः॥ मुनि॥ नागसंरावसंकासं
 पद्मनागसमप्रहंःसफाश्वनयमात्रुटःवडसूर्यनमाम्यहं॥ १० ॥
 वामेश॥ जाप॥ धूप॥ ध्यान॥ एतवर्कविष्मालाकिःऊपमकटधविदी
 हलास्यांपद्मधविचःनिहिनाथंनिष्मकर्नःहंसासनसमानिकुःपूर्कचद्रा
 यनंनमः॥ पा x आ x नू x प्री x पं x पू x ॥ ॐ चद्रायनमः॥ ॐ निष्मचनयनमः

नं पूर्व सङ्केतः सर्वगकनकवर्कहाः प्रदासननमास्तु नं ॥ १२ ॥

सुवा ॥ आप ॥ धूप ॥ ध्यान ॥ आमवर्क महाप्रक्षीः ख अरुनक धानहीः ॥

सर्वरुन सङ्केतः विचित्रा रुन सङ्केतः दानवाधिपति नं दानः धाम

विद्याः यत नमः ॥ पा x आ x अ x प्र x प x ॥ ॐ दानवाय नमः ॥ ॐ वसति

प्राय नमः ॥ ॐ यदाधिपतय नमः ॥ ॐ ब्रह्माय नमः ॥ ॐ किंकलाय नमः ॥

॥ ॥ नमः ॥ नमः ॥ सुति ॥ गुलाय नमः ॥ सुतः ख अरुनक धानहीः ॥

आमवर्क महाकायः धामविद्याय नमः ॥ १३ ॥ ॥ वामे ॥ आप ॥

[illegible]

नमः ॥ नमः ॥ सुनि ॥ नागनाकागुधवनैः कृताकृतलिकनधायः पद्मा
 पवित्रमाह्वानः स्वर्गनागभयनं नमः ॥ १४ ॥ ॥ नमः ॥ यधर्मा ॥

॥ ॐ निचतुर्दश भक्तिकालादिः कलभपूजा विचित्रा ॥

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ ॥ नाम के र्क विधि माहा ॥ गु नू म लु ल ॥ द गु ॥
ॐ त्रि ॥ क ल अ र्च न ॥ क र ॥ स्व स्रि क सः स ग न रा या वः मा म र्कः रु क गु च र्क न य
ॐ ॥ दि दी नः मा चा व य र्क न या व ॥ थ का ति नः मा चा व लि न पि र्कः स र्व ध म ल थ
ॐ ह्यः ग ल त चा को न र्कः द या वः दि दी नः मा चाः मा म या ग ल व क्रा य ॥ गु नू म
ॐ ल याः स्ना न वा य र्कः की ज्व ग न र्कः वि स र्क न या च र्क ॥ ॥ नी ला उ
ॐ न या च र्क ॥ थ का ति न ॥ म ग र ॥ म य ॥ य र्क ग मा चा या दि x ॥ ॥ ग
ॐ त चा न त्व य ॥ ॐ लो हा गि न र्क र स र्व न् स्वा हा ॥ ॥ व उ न त्व य ॥ ॐ व

अनक सुनक सर्वतथागतत्रुचिनिषुनु ईरुत्वादा ॥ सखदी
नलयः मिच्छ नरु दद्यास्यं लवक्रायः स्वस्तिवाचं x ॥ ॥ वलगतदल
सः नामा इकन वीया उभावाया रुभसतया ॥ उं नमूकनामनु हवस्व ॥
थन उभाष्य चागय ४ द उ न ४ द लु थि समगारवृचागविय ४ ॥ मिथानपूजा ॥
सखनननचक ॥ एम वाचनननचक ॥ थकालिन ४ धलकस्ति गा जा उः ॥ अं उ ला
नस्यपीलननक ४ वाचं ॥ उं मधुद्रा गन स्यादा ॥ नकी धं नासि चक ४ कलंक द्याय
॥ समय ॥ मगाविय ॥ वाकं वलि सवकि द्याया उ ४ अलगन हलयाय ॥ कायभा

भावाय अउसः क्वाचयाख अह चाय ॥ धकिविय ॥ ॥ सदानल्य ॥ यधः
माभयनः कगानकः गाग्रयाय ॥ गुनूपजाः दकिनाः सग्वनविय ॥ कलभति
खक ॥ आभिकदविय ॥ चिणलूद्याय ॥ समयाचकः अनदीय ॥ ॥ ०० ॥
नामकननविचिसमाफु रम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१० नमः ॥ आनहावेनोचनवउसखाया ॥ ॥ ऊनकविचिमाह ॥ विचिथं पागास ॥
नचाया ॥ ३ ॥ मालका ॥ अपनायाया ॥ पूजा ॥ ७ ॥ संकेत्य ॥ ॥ ३ ॥ ममल ॥ ६ ॥ ३ ॥
लि ॥ कलभावन ॥ ॥ कन पूजा ॥ ४ ॥ माहनिभावन ॥ विचिथं देवपूजा ॥ ॥ दिदीव ॥
लिपूजा ॥ ॥ ॥ थयालि ॥ ४ ॥ माचाया ॥ ४ ॥ ममर्क ॥ ४ ॥ स्वस्तिक संरुक्क पुचर्क मया ॥ ॥ दी
दान माचावृयर्क मया ॥ ३ ॥ ॥ थकातिन ॥ ४ ॥ वलिनपिथ्यं ॥ ४ ॥ लंखधालथस्यं ॥ ४ ॥ गालचा ॥
३ ॥ कानर्क ॥ ४ ॥ हया ॥ ३ ॥ ॥ दिदीन ॥ ४ ॥ माचा ॥ ४ ॥ ममयागल ॥ ३ ॥ क्राय ॥ ४ ॥ ममनखान वीयर्क ॥ ४ ॥
गाप्रयाय ॥ ॥ विहर्क ॥ ३ ॥ ॥ निलाऊन ॥ ॥ मगाह ॥ ४ ॥ गालचा ॥ ४ ॥ वउ ॥ ४ ॥ सग्वननखाय ॥ ४ ॥

५
॥ अ० ६ लन० ४ पो० ६ ४ ल० ३ का० य॥ ॥ सा० ६ ४ का० ४ पु० ६ ४ न० ६ ४ ल० ३ अ० हा
४ न० ६ ४ अ० ६ ४ मि० सा० द० का० ग० या० ३ ४ भा० वा० ल० य० क॥ ॥ भा० वा० न० ४ थ० न० य० या० गु० लि० का
ल० का० ३ ४ मि० सा० न० मि० य० क॥ ॥ ॐ सर्व० रा० न० न० त० ख० न० स्था० हा॥ ॥ प० लि० ल० द० न० रि०
व० क॥ ॥ ॐ दि० व० वा० स० त० स्था० हा॥ ॥ स० ग० न० वि० या० ३ ४ ग्र० ह० मा० ला० न० का० या० य० क॥
॥ ॥ रु० ल० प्रा० स० न० या० व० क॥ ॥ सि० पि० नि० स० ४ सि० सा० रु० ल० द० का० ग० या० ३ ४ भा० वा० या० न० गो०
य॥ वा० क॥ ॥ न० मा० रु० ला० म० म० ध० क० क० मि० दि० लि० ति० उ० क० ४ दा० ति० न० व० क० ल० क० रु० ल० ४ ख० क० द०
क० ध० वा० न० ४ ना० न० ग० ग० म० ध० का० ल० स० वी० ३ पु० ना० ४ ना० या० न० क० मि० रु० ल० क० न० च० कि० ना० दि०

स्मृत्वा॥ यथाकालिनः॥ कृपां नैकालनक॥ ॐ समाधिः॥ तद्विनापुत्रप्रीनयनखा
हा॥ नासिचक॥ समयमूढनक॥ नासिचक॥ समलसीसावसादकनक॥ नासिचक॥
वागासगया॥ ३॥ समयः॥ धर्मः॥ मगाविया॥ ३॥ कलंखद्याय॥ ॥ केतादकागया॥ ३॥
गाज्ञानमयः॥ वाक्य॥ ॥ अत्यन्तमार्गदधिः॥ खसुमयाविकारं॥ सव्यजनं प्रचरः॥ सप
त्रमंसकारं॥ ३॥ समधूमधूनिर्विविधिः॥ निर्मिगलरूकादिः॥ सन्यासयत्रविविधनाः॥
पत्रिभक्तिगाने॥ ३॥ गगनचरुसूपरूविविधमत्तमान् प्रकाशतिः॥ प्राद्यादिनि
विविधानिचपिषकलरूकादिः॥ कनिनिकयत्वाप्रयुक्तमर्ककपि॥ लुप्तवकाश

नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥
तावता न विप्रं धियं कवा ॥ ॐ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥
ॐ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥
ॐ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥
वायव ॥ ॐ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥
कायिक ॥ ॐ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥
॥ वायव ॥ ॐ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥ नमः ॥ कर्म ॥ १ ॥

सः कलंक पूजायायः समस्तदायाः कलंकदाय ॥ ॥ सिद्धानन्दयथा ॥
कलमननकः साधुयाय ॥ शुभपूजाः दक्षिणा ॥ दिदीर्घलिदाय ॥ ॥ भीमाः ॥
प्राज्ञनवयकाः देवकीपयकलदाय ॥ लिख्यनः दक्षिणदयकः अलंगन
मालयाय ॥ दक्षिणविद्य ॥ ॥ नलसः भगवन् कलसाधिवकः ॥ अक्षिर्षिदः ॥
विद्य ॥ ॥ समयावकयाय ॥ स्नानवलिदाय ॥ समस्तसंज्ञायाय ॥ ली ॥
॥ ॥ ॥ श्रीगुरुप्राप्तनः कनकाविचित्रमाफ ॥ ॥ ॥

ॐ नमः श्रीमहादेवाय नमः सदायः ॥ ॥ भवमावन्धनविचिन्ताहा ॥ भो
दिगुन्मलुल ॥ दगुलि ॥ कलम्भवेन ॥ कन्धपूजा ॥ मोहनिशाधन ॥ देवपूजा
॥ ॥ थयालि ॥ ३ ॥ निकविद्यन्मयागः ॥ थकालिनः ॥ वलिनपिस्थं ॥ लखध्मा
लथस्थं ॥ गालवाकीनकहयाडा ॥ स्थलिकभः ॥ कपोगयाः ॥ सगमलायाडा ॥ रुकुर्क
गयाडा ॥ स्थानवायकः ॥ स्थाप्रयायः ॥ विसर्जन ॥ निलाभन ॥ मगारु ॥ गालवा ॥ सगम
ननगमया ॥ वस्तुलज्जाया ॥ अदूअमल ॥ लिदूप ॥ हदूपदयकलज्जाया ॥
अदूअमलनविचकेवाक ॥ ॐ वडसन्धिवन्धनं रुद्रस्वाहा ॥ ॥ सगवनिविद्यः

वस्तुनगिरिकः लिचिः रुचिः केमानवियः पाद्यायकः ॥ पर्वतवदक्षः ॥ पर्वतः
वर्कः दायः ॥ ॥ अरुनलया ॥ केतानकः ॥ सोदयाय ॥ सिसमयद्याय ॥ गुन
पूजा ॥ दक्षिण ॥ सप्तमना ॥ केतनसिखिकवियः ॥ ॥ लानदेवनाजीपयक
लद्याय ॥ लिथ्यनडाः सनयाचक्रयाय ॥ लानादिद्यायकली ॥ ॥ ॥
ॐ निमिखवावचनविधि समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दूउम-आखः समस्त मालकीः जानकः लखयथ यस्तुतः ॥ पिषा लाष्ट
वापि लातातयाथः पातासन मालकी वा ज्ञाया डाडाः कलसः दूउम-आखः रुडाः
संखडा संतया ॥ ॥ कर्पाः पूजा संकल्प यावक ॥ कलसः दूउम-आखः यागः सुता
वस्तुः आकर्षणः धूपः पञ्चपत्र पञ्चा ॥ थयालिः ०० लिभावायाग नासिचः
कः वसिष्ठः प्रियनिर्लाङ्गन ॥ मगारुन नायक ॥ यैवंगमा वाद्यादि ॥ नास वा न नाय
ः लाहागिनी नरु २ सर्कन स्वाहा ॥ सग्वन न नायः सग्वन विद्य ॥ सक्त्यं लक्ष्मि
लास वाकी याग मिय ॥ सग्वन लयः रु लांगिन नरु २ रु रु स्वाहा ॥ माल वा की न

कं० लंख भलथ सं० गाय होला आदू गायः स्वस्तिका कन॥ ॥ होनक की था ३
सं० कलसं० दूदा गायः ४ ऊ आया ऊ आ संख आया ख आ सं नय॥ यिनि मावा स्वस्तिका ॥
नय॥ थ कालिन ४ पूर ख र्म॥ वलिन पि स्या हया अ० होनक॥ ॥ थ या लिः प
जा संक ल्यः सा ला शो० कलसं० सग्वनः ४ दू आ स्या ख पूजा॥ सता स्र च० अ० कर्षिन
धूप॥ निलीं ऊ न॥ प्रकाय वा न पूजा॥ सुनि॥ ॥ थ या लि होनक० नं० क सं नं० स्या
न वा र्क० विसर्जन या चर्क॥ कं० गाय दान विद्य वा क० मा हा वा क० अद्यादि x वा क॥ ॥
य ना थ ग मि मू द्रा० होन लोक प्रण क नि० गृहि त्वा पा नि ना प्रा नि० पा नि वृद्ध प्र कि ३

क्रि० ४ ऊनसत्यनसं हनं ॥ प्रहोपायानमस्तु ॥ ननसनेनभेनार्थः कामा त्वंपविपू
त्रय ॥ धीनही ३ ॥ धर्मया १ संघया ॥ ॥ ध्यायसि १ नित्ताऊनः मगाह १ गाले १
चा १ सग्वनविय ॥ सदानलया ॥ धीनहया १ स्थानग्वयनिवियके ॥ दगुलित्ता १ च १
दुह्याला १ कलसयार्ग १ दवतामालकीयागकायके ॥ कपांपनूषयाग १ गुलाह
ला १ धकासित्ता १ मालकीयागग्ववसायके ॥ धीनहयासग्वनविय ॥ समिने १ ले १
ज्ञाग्ववकायाडा १ ग्वय १ यिलिमायायालाहार्ग १ मामः वदयालाहानसदकास्यं १ ल
आकाय १ मालकीखज्ञायाजलआकाय १ ॥ हनं धआगुसग्वनविय ॥

धनः सह हारु हयः ॥ अगनवीः कलंकवी हयाः ॥ अगनकायकः ॥ पक्कग्रस्तकाय
कः वाकः ॥ ननामिकापानवायू ॥ मधमापानभवव ॥ समानागर्कनिहृया ॥ कनि
हादानवायूव ॥ वानीवायूचर्ककानिः ॥ प्रधनपक्कवायूव ॥ ॥ धनः स्वसह
नविय ॥ धकालिनिकेनं लासुवियकः ॥ मद्यपानयिपिपिपियाचकः ॥ धनयियकः
॥ तिसागयकः ॥ सज्वनधलिनयः ॥ मालकपेवालगयाः ॥ ॥ कोनखंसिः ॥ कलंकपूजा
याहाकायः ॥ प्रविग्रयाय ॥ दानवागास ॥ धनः नसाकः ॥ ग्वयः ॥ ग्वभलः ॥ स्थानः ॥ विसर्ग
प्रसायः ॥ कगानकः ॥ गुत्रपूजाः ॥ दकिस्तः ॥ कलसातिधकः ॥ ॥ अडासवीककलसः ॥ मिऊ

नरुकोला॥ खडासचादुगुकेलसमिसाऊकोलाविय॥ ॥ अतिर्विदविय॥ ६

समस्तविसर्कनयाय॥ खानकाकायविय॥ समस्तसजाझाय॥ ॥ वृत्तिहा

नकेविचि४ विवाहनक्रिया॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१३ नमः४ ग्रामाहावेगोचनवऊसत्याय॥ ॥ कसवन्धनविधिमाहा॥ गुनमनुल

॥ दगुति॥ कलसपूजा॥ कुरुया॥ मोहनिहाधन॥ ऊडासः४ कगकन॥ खडास

मिऊमरु४ अपनायासपूजायाय॥ होनकापनिः४ नर्क४ थकासिन४ वलिनपिर्षत

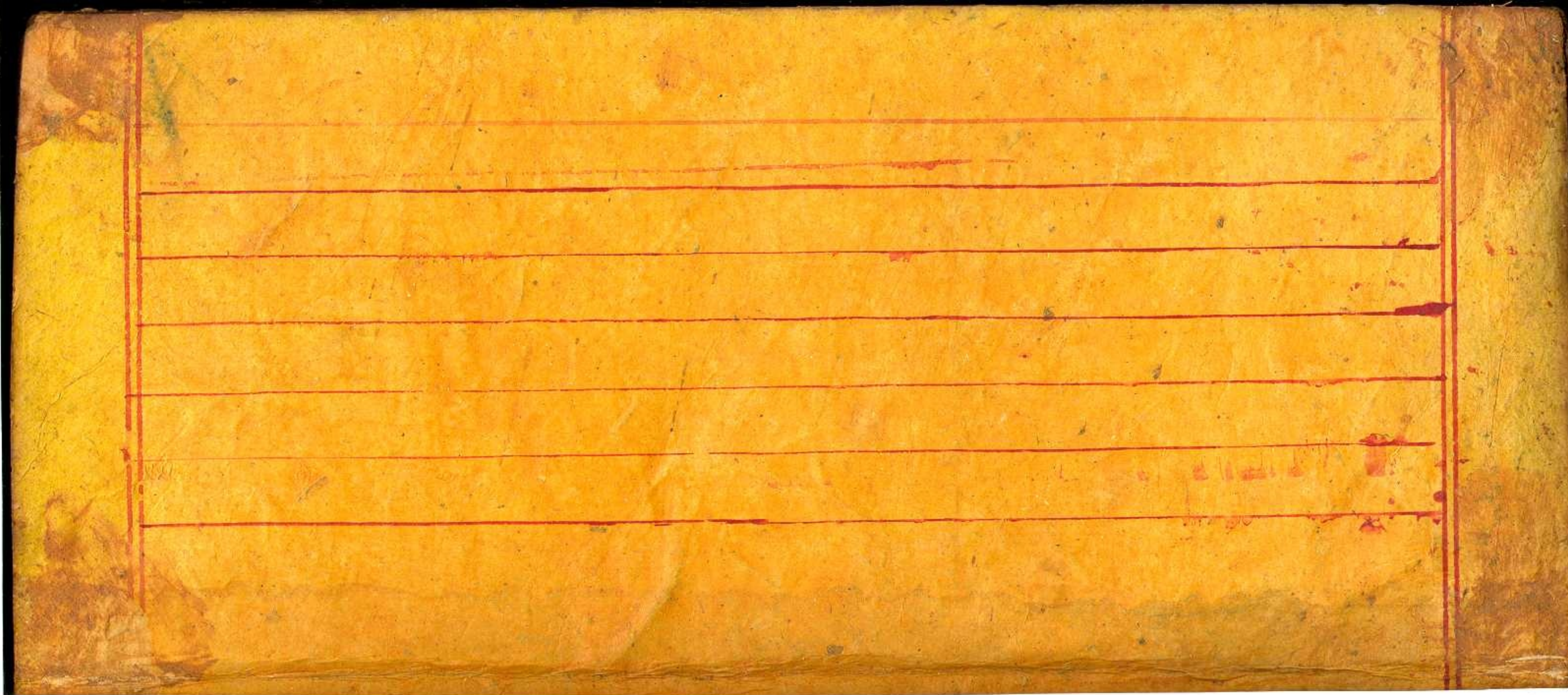
खधासथस्यंदूगाहया४॥ स्थितिकसंगया॥ निमस्यन४ खानवीयक४ कगानकः४ वि

संस्कृतं न्यायकं ॥ निजाग्रहः ॥ थकातिनः ॥ मगाहः ॥ गालचाः ॥ वडः ॥ सग्वननलाकाः ॥ सा
प्राकीसनलतडाकायपत्रपत्रं ॥ पत्रखनः ॥ मितायाः ॥ सापीलरुनकं ॥ चसापानः ॥ साका
वाथयकं ॥ दावांसः ॥ दनकंकचिनः ॥ लूकंकचिनः ॥ डाहाकंकचिनः ॥ साटनकं ॥ सापील
दाग्वलं पाचकं ॥ कमानिस्त्रयकानः ॥ दाहिहिने ॥ वाक्य ॥ ॐ ॥ कुगवचनरुं ॥ दनकंक
चिः ॥ लूकंकचिः ॥ डाहाकंकचिः ॥ चसापाः ॥ म्गुषापाः ॥ थदागाः ॥ सापीलदाग्वलसं
चाय ॥ पत्रखनः ॥ सिद्धमदलडाकाय ॥ मितायः ॥ कुगकनलडाकाय ॥ सिंधूनचाय
कः ॥ वाक्य ॥ उद्यानाद्यादि ॥ सग्वनविद्या ॥ यीनह्या ॥ सग्वनविद्या ॥ साचि नानसः ॥ सा

नंददासं ४ पत्रव्यामल अज्ञाय ॥ वल्लु ४ नामकल ४ कोल ४ चकन ४ मिताऊनले ४
अज्ञाय ॥ माध्याः मूमायवर्तिः समलं ४ देवयामदाय ॥ गुलाक ४ नायो ४ नकिं ४ पाः
यथलमाकीयामकाय ॥ सुरुनल्य ॥ सिगसमयदाय ॥ केगानके ४ पुप्रयाय ॥ गु
नूपजा ४ दकि ॥ सगनगय ४ कलहातिषिक ॥ अगिर्विदिविय ॥ सूर्यदेवकीप
यकदाय ४ केगानके ४ मालकादेवकीपयकलदाय ॥ ॥ समयचक्रयाय ॥
छानवलिदाय ॥ समलं स अज्ञायकलो ॥ ॥ ॐ गिकेपवचनविधिः
समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१३ नमः श्रीमाहावेश्वरनवउसत्वाय ॥ ॥ तिमवधिविचिमाह ॥ सूर्यार्च ॥ गुन
महल ॥ दंगुची ॥ कलभपूजा ॥ होमयागसा ॥ मूलकलस ॥ श्री ॥ लक्ष्मी ॥ यक्ष ॥ यक्ष
ही ॥ नागपूजा ॥ यहैयायत्रिनिष्ठापन ॥ नडाग्रहपूजायाडाडामय ॥ पाथयाय
॥ ऊनकायाय ॥ वलिनपिपसी ॥ लंखधाय ॥ गालकाका नर्क हयाडा ॥ स्वसि
कर्गंरुकागुचर्कगय ॥ गुनमहलदानक ॥







ॐ नमः श्रीमान् देवाय नमः वरुणसत्वाय ॥

॥ प्रवर्ज्याः वृथा कर्मा विधिः वन्द्यं यद्विधिः

माह ॥ ॥ दुर्गाः पञ्चाङ्गाननः स ग्वयङ्गाननः सातको गाललावकं ॥ इह सातासः

नालकी दवगाथापनायाय ॥ विङ्ककनः स ग्वयनः गालसः सादाकावः ग्वमाप्राः वालक

मात्रिः वेष्टदः ॥ मूलकलसः श्रीलक्ष्मीः इङ्ककनः किदाउमदाः ॥ नाकाः नृलिंशः

वचननागद्वयः ॥ साताशः ॥ अग्निः मूषगः इहकृत् ॥ धर्मः थापनायानाविधिः धर्मपूजाः

॥ ॥ धर्माः हिन्दूयद्वयः ॥ पिषालाषसः धयाः ॥ थाकालिनकिनं लासाताउदयः ॥

आगं विधित्तस्तिकसंस्तनं ॥ वृथा कर्माः पीसमृदको कायगः ॥ गुनमलः ॥ समाः

वि० सर्गं० पितृमूद० वक्रदिग्भङ्गात्कलं पूजा॥ अगदगसाविष्काविष्कापूजायाय॥ ॥
वक्रदिग्भङ्गाय॥ गुन्महलदानके॥ विसर्जनयाके॥ नितार्क० मगारु० माचा० वडंत्वाय०
सर्गं विय॥ अदूअकयनालअज्ञाय॥ भेषवावचनयायमन्त्र॥ उं वज्रवचं॥ त्रिक॥ कनिक
विय॥ वक्रदिग्भङ्गाय॥ ॥ धनपाकनलिगढादय॥ पिषाता वृत्तं लम्बय॥ यहसातातदू
ज्ञादय॥ स्थानिकसत्त्वाने० गुन्महलदानके० विसर्जनयाके॥ पिणायने॥ प्रालिनिनिनग
यके॥ उं आहं सर्वमज्ञापनयके॥ मासकलके॥ उं सर्वपापमर्दय॥ रुद्र॥ स्वच्छायकालन
वृयके० मातङ्गयके॥ ॥ व्यापलिनोयाहागपूजादयिनाद० विय॥ अगंसातेनकासा

प्रायकं ॥ धातुसंख्यकः निनिर्णयः ॥ लूति ध्वनकं ॥ श्रौतसामन्तनं मीलद्रूपकं ॥ धडाश्च
संगयः ॥ ॥ गुणमनुलपानकं ॥ विसर्जनं ॥ पक्वगव्यवियः ॥ प्रिसृष्टयाकं ॥ ॥ धनसिष्य
नन्नावम्भनाः जायनायायकः ॥ लाक्षणद्वयलपंगयकं ॥ धनसि लोकवानं ॥ प्रवर्ज्यचनयिष्यामि
प्रिष्लोकं वृद्धलः ॥ अनूकस्यामयादायः कनूनाथं अनूयह ॥ अथ ॥ दृगुन्नदनाथः दृल
पालस्यनः किनाकनूनाथि पागस्यविज्यायमानः दृक्षालसाः किमेनतः प्रवर्ज्यकम्मधललप
गुन्नूनिवसकलः किमेनयावैकापूर्त्तियास्यविज्यायमानः दृगुन्नूनिनिश्चयनं यायद्रलो
॥ ॥ गुन्वाच ॥ लाकलपूयः प्रवर्ज्यवर्गचायमिर्लसमसासिन्नूनिद्रुल्लरवमी ॥

अथ ॥ रुद्रकलपूषः धार्थिगु वगहनधलततपरु ॥ अलात्रनिधकः रुनरु ॥ अज्ञानरु
अथनंरुन ॥ कोरुअगुनालनमगः नीवकनादिमिधसिअनाअत्मानयाहून ॥
सिध्यावाव ॥ वासनात्मनः प्रयुज्यावग ॥ कामिः कृपाकनूत्यः ॥ अरुमिदं नामाकीवः
कुरुहगवर्नः माहाकानूनीकः सर्वरुसर्वदसिर्गः सर्वरुववहयानिकः महाप्रवृषः अरु
अकायनिवृत्तकार्यः निवाकूनकार्यः धर्मकायासवनगद्यमिः गननानामग्रसवन
गद्यमि ॥ अथ ॥ हागुवृदवजसत्यः किन्नात्मासप्रयुज्यावगयाय नूनि ॥ का नूनिवसक
लाः रुतपीतस्यनप्रसन्नरुयाडा कृपायास्याविज्ञाहूनः यावगुग्वलागादवः किञ्चिवन

नलंका श्री ३ वृद्ध या के सवन या यः वृद्ध धाय गार्थि क्क धाल साः महा कन वनः समलं क

मूना द वः समलं सिस्य विज्या कः समल रूप कन रु वः समल राय मा य के रु वः धार्थि क्क पू व

षः व उ स वि वः स ल्प आदि न र व हु या य न डि व उ म न उ द व स वि वः समल या सि न र

वृः धार्थि क्क वृ ग्ग व वृद्ध या के कि न सवन या य रु ली ॥ ॥ गु व वा व ॥ सा ध र क ल प

प द्या पि ग र ह लिं ग स मा प्र वृ ष्ठा लिं ग स मा क्का ति प्रि स ल्प ॥ अ र्थ ॥ दाम्पा ष्यः स र्द र द न म न

ति व व न डि के र उ न उ या द न क्का नः नि ग्ग य न रु अ लाः प्रि स ल्प या य र व उ लाः द न नि ग्ग य य

व ॥ ॥ सिला क ॥ सि धा वा व ॥ गु वा सि ध्या न्य र्दः प्र वृ ष्ठा त्र ग स क्का नि प्रि स ल्प ॥ अ र्थ ॥ ह गु

३: शुलभा लस्य नश्वर दयक काः किन निश्चय नयाय ॥ प्रवृज्य विनयाय किन निश्चय न

रूपाः वृद्ध सत्यं धर्मसत्यं संच सत्यं ॥ ॥ तिलोक ॥ गुर्ववाच ॥ अधूना संप्रवृद्धा मि

मृदूवत्समहावतः प्रगाढावकथं चैवः पक्वमिष्यविचित्रयगा नृथः हनिष्यद्वन नृ

नकि भूमिं सुंकाइल भः किन धनि सुन न कन इलः ह पृथु वन या न्ना वा न ष ग थ ध

लसाः द्रुपाः पक्वमिद्राद्यानुतिश्रुदिपनजिनकनः शुनयकचिद्रुपादाजमकनः

॥ गुत्रुवाच ॥ प्रान्नं न हं न्याः नपि वंचमश्नः मृषां न ताव्यः न ह वै त्यजश्चैः प न

ह्येताय्याः सनसापिनेष्टुः श्वेत्तकृगष्टुः ५४ हवत्तनानी ॥ नूय ॥ हगिष्टुनेवया ६

प्राणमावर्कमगडाः मद्यपानस्य जलपेन मद्युजः रुतषक्राय मद्युजः भवयाद्रिया वैडा
नमद्युजः भवयाद्रिया सत्तातनय मद्युजः ध्वगं पक्वमिष्याने मया दडाः गध्यथ ज
उरुसजनेः नृत्थं नृपयकं नृत्थं गसजने दयिडा ॥ ॥ गुनूवावादिंसा कार्यं
नृत्थं नृनेः मनसाववसापित्रः गत्मादिंसा नकार्यानिः नृत्थाय नृत्थं दाहवो नृत्था ह
मिष्यः भवया प्राणकाय मगडाः मननं नृत्थं तालपे मद्युजः दिंसा यागतामथ नृत्थं नृत्थं
यिडा ॥ ॥ मिताका यदामद्यन गत्थेवः सत्थं नृत्थं पत्रायनः ध्वत्थं नृत्थं सत्थं नृत्थं
त्तात्थं नृत्थं नृत्थं ॥ नृत्थं ॥ नृत्थं मद्यपानस्य जलपे मद्युजः मद्यपानकाया पाप

नथजकंदउगुहानसकलं वथइयिअः समलसात्य वथइयिअविचं सइयिअ

॥ मिलाक ॥ मृषावाद्यवाः नालिमान्य सदातवः मनमिथ्यानक्यादः दू

खपंकषूजायगं ॥ नृय ॥ हनिष्यरुगषकायमस्युअः रुगषकागताः सदासर्वदा

कारमहादूः खसंकलसपवतपंजनेमालिअः धनपापयानिनिर्निनरुसषका

यमस्युअ ॥ ॥ मिलाक ॥ पवदयानूलोरनः महादूषाषूजायगः दविप्रार्कवपंक

षूः पवदयानूलोरयगं ॥ नृय ॥ हनिष्यमयादवसलोहवायमस्युअः लोहवातासा

महादाविप्रसमूदसदूवायिअः दूषमियिअः धनपवयादवसलोहनयमस्यु

ॐ ॥ ॥ गितोक्त ॥ पत्रदात्रा कृतावितिः पूषदात्रापि दूत्राः सदा दू४ रवं महा कर्तुः प
वलिहीनस्य वच ॥ नृप ॥ इति ध्य पत्राणि त्रियाकं गमनया यमस्युजः मवयाति त्रियाकं न
नगलसा च पापनः यडाया हाया हागया क्रातिज वायमातिजः पूषडा वायमातिजः द
त्वतिथिजः ध्वगं नमवयातिजः तन्हा गया यमस्युजः ॥ ॥ गितोक्त ॥ गुणो ॥ इध
नाः एषा माहा स्यामिः प्रानाति पापः नद्य पानादि मृषायादिः पत्रद्वयः पत्रदात्राय गानि प
कृति ध्यानि वक्रिये दहमका मिनाथ कृपा कृत्र ॥ नृप ॥ एतु गथ दस पातस्य न
हाइलाः नृप ॥ इति नन्य नाजः ध्वगं पकृति का चया गुप्राय मित्र कृपाप नृदि नैथ दागा

ऊननालगरुयाः दलपालस्यनऊगा रुपायात्यविऊरुन ॥ ॥ पूनजिष्ठावाच ॥
॥ समन्वाह नूहमिष्टं नामायावकिं वः प्रवृज्यवृग धनयामि ॥ नूथ ॥ हनाय हं उ नू
किंगनत्काननरुपायाहूनः किचय्यन्वागलः प्रवृज्यवृग धनतलपनिचयरुता ॥ ॥
थनामूलायाज्याहलपूजा ॥ निनियगः अलरुतअक्राय ॥ लूषावाअहाषा वः नू
गं म्माया ॥ मनु ॥ ॐ सर्वज्ञानवाला दूआः ददयं रूहं रुद्र ॥ साषाय ॥ लमूतः अहम
लं क्रमपूगपने ॥ ॐ धर्मस्य द्यचिकवनसंयधयसंयधयहं ॥ लूदलीअहादल
नैलूतिधनक ॥ ॐ धर्ममागहं ॥ ॥ धनपिगायन ॥ पितनूदनलूयक ॥ उ नू

[illegible]

पाताद्य ॥ इति का ॥ स्थान ॥ अथ ॥ नगा ॥ पृष्ठा ॥ म ॥ लुगि ॥ नृध ॥ ॥ यनदभ
सिध्यायाषकने ॥ उरूवाच ॥ कलपद्रु ॥ दभसिध्याद्द ॥ दभयामिः ॥ नृध ॥ नृध ॥ नृध ॥
दिः ॥ नृध ॥ गीत ॥ पृष्ठा ॥ मालाः ॥ गन्धर्वा ॥ प्रनः ॥ उच्चसयनः ॥ महासयनः ॥ अकातरा ॥ जन ॥ नृध ॥
यगानिद ॥ भगिष्यानिप्रमि ॥ दिति ॥ तसमका ॥ मि ॥ नृध ॥ दगि ॥ दभगिष्या ॥ अथ ॥ यगु
लिजिनकनेः ॥ ननेदः ॥ दद ॥ धालसाः ॥ परवतु ॥ रिबं ॥ अदिपं ॥ धायगु ॥ वतुः ॥ प्या ॥ रवतः
हयगुः ॥ महासेगुः ॥ वा ॥ कलान ॥ दयगुः ॥ नखा ॥ वतु ॥ दयगुः ॥ गाजा ॥ गुला ॥ सा ॥ दने ॥ गुः
गडा ॥ धा ॥ भमन ॥ सची ॥ नगुः ॥ वला ॥ मरव ॥ यर्क ॥ नृध ॥ ला ॥ सन ॥ यगुः ॥ धुलि ॥ यागा ॥ दभगिष्या

अयः च न गतं रुडाः मरुतामहापापलाः ०३३ः रुतानिर्मलज्ञाननंगा कपूरि

डाः तव तागवमधनं वय इयि डा ॥ मिष्या वाचा ॥ गुवा इह मिष्या नामाः या

वर्कि वलं दमिगानि ४ द्यामि ४ मकामि ४ यय ४ सूर्यादिद ४ मिष्या नामा द्या ४

न्यद् ॥ नय ॥ तागुवसः ४ लपातमेन ४ हादयककः ४ किन्वागलका ४ प्रयगुवसु

वाश्रथायगु ४ आदिवनः ४ मगडा मगडागु ४ किननि ४ यनं गालन रुया ४ ॥ पून

मिष्या वाचा ॥ गुवा मचीवन ४ रिक्कापाग्र ४ खउ द्वाविददु ४ नानि संदही ॥ नय ॥

तागुवसः ४ लपातमेनः ४ किननानैः ४ रिक्कापाग्र ४ खउ द्वाविददु ४ विल्यविज्या ४

न्य ॥ ॥ चनातीविवन ४ मचनयाय ४ यपाइन ४ नकं नयाडा ॥ ॥ खकन ॥ ह

वत्सः ॐ दं विववः सं च ह्यविस्वासायः सं च पवितां गभयः न था वा ऊ कूलगमनायः न

था ग्रामनगय पविर्वरुनाय नूधिमिस्सुनु ॥ नूथ ॥ तातिष्य दन च वीवव च ललपि

आः गुलिनिदिन सं च स वल्लप द गुलि वलः गुलिनिदिन वा ऊ कूल आ न द गुलिः गु

लिने ग्रामनग वीहलेया न द गुलिः ध स्वगा र द द आ विवव याः ध धिं गु वीवव द

न च ललपि आ ॥ ॥ गु वू उ वा वा ॥ ॐ दं मृषि ला ऊ नः न पवि तां गभय ॐ दं रि व रि व रि

का धर्म धा तु स्व रूप मा का य ॥ नूथ ॥ द मि ष्य द न न ला ग या य नाः ध मृ रि व ला ऊ न

च ललपिः ध रि व रि व रि व का धर्म धा तु स्व रूप मा क मि ग द क द न च ललपि आ ॥ ॥

थनवीवव४संघादिस्थनथियकाअलअक्राय४कआयगालगाअरुयकं४रुसक
नवयक॥ चिववननियकं॥ मन्त्र॥ ॐ समनकवृद्धानीसर्वगयगगाधिगिलिगालम
वीवलस्याहा॥ ॥ स्रवगनगिचक॥ मन्त्र॥ ॐ स्रवस्तुमिलकविरवरनस्याहा॥
॥ ॥ थनपचक्रनूडा॥ थनानाहावतिविय॥ सिष्याकृतिदूय॥ समसि४व्याल४
काकाउ४कापयाकाउदूय॥ पूरुकाकालनदूय॥ पविर्कपूजा॥ ॥ दगुलि व
तिविय॥ थननितांकन॥ मगारु॥ मालका॥ वजनत्याय॥ सगानविय॥ ऊडमा
नचलेनदानकं॥ सकसिर्नकिग्दगाने॥ ॥ पूरुक्तियाय॥ माहावाक्का॥ नूद्य॥

बहुसाक्षात्कायाणां ॥ श्रुत्याणां ॥ सकलप्रकाशाणां भिष्याद्भुगियाया ॥ अस्तिर्विद
मनुलविस्तर्कना ॥ सिद्धान्तत्रय ॥ ॥ यन्नरिद्राहानके ॥ ॐ पात्रसुपात्रपिबु
पार्श्वदही ॥ ॥ यन्नागुपूजा ॥ देवदहिना ॥ अतस्तवउग्वदाउःवृद्धपूजा ॥ अस्ति
तद्ययकं द्यायः सरणनगरयकं ॥ कलसककाय ॥ रिषकविथ ॥ हादीष्टनाकाय ॥
थिदहिना ॥ काय ॥ कृमापनयाय ॥ वाचंष्टयकं ॥ सकलदेवतावितर्कनयाय
॥ स्थानककायः विथ ॥ कृत्वापन्नकायकः ॥ ग्वगुग्वयलउमदगयाः ॥ कापालकामनद्व
यकाडाः ॥ दृष्टनकुरयकः ॥ उषीलनः ॥ यामलनगायकः ॥ ह्यलिवाकगाथः ॥ दूधूधालथ

य॥ नानावाद्यधायक॥ दडाडापकलदाय॥ ॥ लिहाअयअ॥ पिखातापसतभ
त्यः पडा दसदगायन॥ तसंतसतग्यनविद्य॥ ॥ धाद्रुगयमातहा॥ क्रिक्रिदि
या॥ पय्मनृगपालनयाक॥ निहादव्यत ददाककक॥ द्यियंनगडा॥ नमयाई
नयमात॥ ॥ गुत्र४ नकी४ गुला४ पायथल॥ तगंछेविपनधियक॥ ॥
॥ मिश्रापुव्यावगविद्धिसमाफ॥ ॥ ॥ ध्वनैलि४ पद्रुखनै॥ निवव४
ककाराविद्धिनाह॥ ॥ द्रुपांगुत्रमहुल॥ तमाद्धियाय॥ नजीगार्थकलतपूजा॥
पनवदददृष्टापरिद्रुका॥ नकिनिनवतिनपिस्थः लषमनहायकलतग्यस्थहया॥

॥ ४ ॥ त्वत्ति वास त्वत्त ॥ वत्तन तुल्य न क ॥ विसर्जन ॥ नितार्क ॥ नगा ॥ ना ॥ वड
तगीवि य ॥ वत्तन काजा वि व व व व ॥ सन ल जान क न य ॥ ॥ गुत्तु प्रार्थना या
व क ॥ गिष्ठा वा व ॥ गुत्तु मृषा वा द क र्थ गामि ॥ जा व न ॥ जी व ॥ प्र व र्था व र्ण च ॥ अर्थ न
त व्हा ॥ ४ ॥ ॥ मंदू ल र्थ व र्ण ॥ अत्ता म र्थ स्था पा य कृ पा कृ न्ना ॥ अ र्था ग गुत्तु त्ति न म
ष गुत्तु वा ज्ञा वा ज्ञा दा ॥ अग्नि दू ल र्थ व र्ण न ॥ य र्थि गुत्तु वि छि ड्ति न च ल त प र्ण ॥ ४ ॥
जाम व र्ण ॥ ग र्था वा य मा ल उ पा य या र्थ्य प्र त नू द य ना ल द ल यी ल त्थ न क र्था र्थ्य
वि र्ग क र्ण ॥ ॥ गुत्तु उ वा वा ॥ कृ ल पृ र्ण वि न म या अत्ता म र्थ नि ॥ कृ ल पृ र्ण

स्वापायानिः ४ भिलवनं पुनवनं महायानकर्म च न उपायक नाम हविष्यति ॥ अर्थ ॥ इह
निष्पद्यः कनडपूतं अयाध ॥ कनप्रवृत्तं वनतपदं न प्रवृत्तं कथा ॥ श्रीगि
ह्रवृत्तं ॥ श्रीगि कथक कन कथा ॥ श्रीगि नन ४ श्रीगि पापयागुष कनका
वि ॥ कन कथा चर्क कल ॥ गडा कथक वन चर्क कन वनयाग ॥ श्रीगि कन म
साउपाय दडा ॥ गय कल ॥ कन कथा वीरु कथा कडा ॥ ह्यपलागया
अ ॥ कवृत्तं गालनं गडा ॥ धनतिहिकादन काह्य ॥ महायान सचलतप अथ
ग उपायक नाम कन इयूडा चर्कः उपायक कडाः श्रीगि दयक ल्यविज्यागं ॥ ॥

थनगुत्र्यागविवलकीलंलअक्राय॥ वन्दनायाय॥ ॥ धनमलंदानका॥ किंग
ननका॥ विसर्जना॥ दहिना॥ गुत्रपूजा॥ नमि कीदा॥ लगनकलसंककाय॥
हादहिनाकाया॥ अ०००नाकाया॥ ॥ वृंनिवीववकनयविचित्रनाका॥ ॥
॥ ॥ उषूर्नंउविववकनयकलसा॥ दिगु॥ गुत्रसगनीदिय॥ अतगल
अक्राय॥ सिदानेत्तया॥ ॥ महुलकलसपूजानुनाले॥ दअअपकाहयअ
पिषालाषसःवलिनीपित्यकदगायने॥ गलंवीने॥ वलनहुलदानका॥ विसर्ज
न॥ मगाका॥ गाका॥ वज॥ सर्गविय॥ विववककाय॥ लनलकीनेकाअनय॥

[illegible]

पीसमूत्रपूजा पूजा कर्त्तव्य

ॐ नमः आरुमासु वैश्वनवकुसुमाय ॥ ॥ चण्डिकायाः पीसमूत्रपूजा ॥ ॥
द्रुपां प्रारुयार्थ ॥ गुण्यार्थ ॥ ॥ नमो विधित ॥ वरुणदत्तगालं ॥ निकमानः ग्या
न्यावता ॥ रुसिकथि ॥ निकसिकथि ॥ लिचिद्विविक्तिवा ॥ नृदूआ कयनः विषय उपगु
॥ पित्तमूत्रकलसग्व ॥ संखग्व ॥ दधुसत्वनं ॥ पक्षध्वजद्व ॥ नृदूआ ॥ न न्याव
न्या ॥ रुकुंका ॥ वृंकायका ॥ वृंका ॥ ध्वं ॥ मगारु ॥ गालग ॥ तिसाकी ॥ गालं गालकी दय
क ॥ ॥ सहन ॥ गनस ॥ मारुका ॥ गवमागा ॥ वालकुमावि ॥ वैखानव धनं गाल ॥
काथपनायाय ॥ ॥ विधिधं पूजा ॥ गुनगुत ॥ उद्यागा ॥ मनुवितर्जन ॥ त

माधि॥ ॥ विधिर्धंगनद्यजतर्गपूजा॥ ॥ च्यातिपीतमूदकलसःवर्णादस
जातेयानपूजा॥ शुभावसूचा॥ आकर्षन॥ धूप॥ ॥ च्यान॥ यकावादिचतुर्वी
कः॥ वंकावाहवनशुल॥ ॐ आहं कावर्तजानं॥ प्रिगगामशुलाहानि॥ वंकावववर्त
शुक्रः॥ सफरुनासद्धादिक॥ दादिनंनलिर्गहस॥ वल्लहलहवर्तक॥ उरुवपन
नागम्य॥ धूपनीलश्वपनिर्ग॥ अत्यमनिर्गवाल्मे॥ वामाभनिर्दिगाभनी॥ च्यान
गुगिद्रुगाकृ॥ पूजादिपविपुडिगि॥ मनूष्यास्यसमूहर्ग॥ सफरुनावर्तहर्ग
॥ दिव्यालंकावहरवाहं॥ विविद्राम्बवधनिर्ग॥ वक्रगतागथसंघर्ग॥ हृदिस्थगा॥

वध्विहा॥ तावयंमगुलंमध्य॥ वगुर्दिगसमनग॥ १ ॥ पूर्ववागुकिस्वर्ग
क॥ वनदं वलपानय॥ दिव्यरूपस्वरूपक॥ नवरुनात्सहारिणा॥ २ ॥ दक्षि
नं नक्षत्रकावक॥ पक्षरुनावलंरुगा॥ द्वादशमहयमूदा॥ वासवतत्प्रकाशि
न॥ ३ ॥ पश्चिमिहविगककाग॥ तत्पक्षरुनात्सहारिणं॥ तत्तिर्गदक्षिणं ह
स्तं॥ धनवतीवलमंजरी॥ ४ ॥ उग्रवपक्षनागक॥ भुवनीलकवर्किर्ग
॥ शरयवलमद्यटल्वेव॥ प्रिरुनात्सहारिणं॥ वगुर्दिगं वगुर्हिनं॥ वगुर्मानन्दम
गुलं॥ वत्वानीनिधिसत्त्वानं॥ तावयविष्टिपूजयन्॥ ५ ॥ नित्यंजन॥ ह

सा घ॥ सिद्ध॥ ऊँ का॥ स्नान॥ सन्न॥ नगा॥ धाली॥ ॥ पूष्य न्याम॥ ॐ नृ
वैशवना हव वज्र वरुणा य वज्र पूष्य पुनित्वाहा॥ ॐ वं वीरु ह वा य स्वाहा॥ ॐ
आ वज्र वरुणा य स्वाहा॥ ॐ वीं वा गु की य स्वाहा॥ ॐ मं मरु का य स्वाहा॥ ॐ कं क की
न का य स्वाहा॥ ॐ पं प ना य स्वाहा॥ ॐ हूं हू नृ नाग वाजा य वज्र पूष्य पुनित्वाहा
हा॥ पुनित्वाहा॥ ॥ ॐ मं म हा य न नाग वाजा य स्वाहा॥ ॐ कं क तिक नाग वा
जा य स्वाहा॥ ॐ मं म स्व पात नाग वाजा य स्वाहा॥ ॐ वं व द्रु प्र ह नाग वाजा य स्वा
हा॥ ॐ वं व द्रु नाग वाजा य स्वाहा॥ ॐ हूं हू य प्र ह नाग वाजा य स्वाहा॥ ॐ मं म न

वाहू नागवाजाय ॥ उं मंमहिप्रतनागवाजाय वडपूर्य्यप्रगिदृस्याहा ॥ **धुमिउक**
॥ ॥ उं ॐ ॐ ॐ नुनागवाजाय स्वाहा ॥ उं वं वधननागवाजाय ॥ उं हं ह्राट
नागवाजाय स्वाहा ॥ उं गं गंगधननागवाजाय स्वाहा ॥ उं जिं जिन्धननागवाजाय
स्वाहा ॥ उं जूं जूहवननागवाजाय स्वाहा ॥ उं वं वहुनागवाजाय स्वाहा ॥ उं सं सगसि
र्यनागवाजाय वडपूर्य्यप्रगिदृस्याहा ॥ **धुमिपञ्चिमा** ॥ ॥ उं सं ससुखि
का नागवाजाय स्वाहा ॥ उं नं नन्दननागवाजाय स्वाहा ॥ उं सं सनूडपूयनागवा
जाय स्वाहा ॥ उं वं वधननागवाजाय स्वाहा ॥ उं मं मधनननागवाजाय स्वाहा ॥

ॐ संताग वैनव नाग वाजाय स्वाहा ॥ ॐ कूं कूं हुलें नव नाग वाजाय स्वाहा ॥ ॐ जूं जूं नः
गच्छा वैनव नाग वाजाय वऊ पृथ्वी प्रगिरु स्वाहा ॥ थुगिदयि नस ॥ ॥ धादय
लाग्छा ॥ यद्वलवादन ॥ गय्यन ॥ ॥ लुगि ॥ ऊलाधिपति नाग वाजा स्वस्वदिति व
वलिगा ॥ सत्वाय सदाशक्ति वरूनाय नमस्तुते ॥ ॥ वदी गनाग ववन ॥ हुलें गमा
न रूपं ॥ वलप्रतावकाल पू ॥ ॥ कलाहिलिषि कूं ॥ गगनलदाग पुन पू ॥ स्वाव ही
वकूपे ॥ लना सुगिष्ट गव वां ॥ वरूनं नमानि ॥ ॥ लगा कूं ॥ कमापन ॥ य
धर्मा ॥ ॥ ॐ कूं कूं लूं दिं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ काप मनु ॥ ऊऊमाने चलेन दानक ॥ किग

पुनः पुनः पुनः

मिने॥ महुलविमर्जनयाय॥ द्याददिना॥ सगनगय॥ द्वा मा पं॥ गुनपूजा॥ स
दादिना॥ आसिर्वाद॥ हर्नहागिभूनेपूजायादागिनिनीकाकाय॥ ॥ॐ॥ मिपि
सम्पदपूजाविधिस्तमाप॥ ॥ ॥ हर्नवाहालसदुसलहया॥ ॥
कृपांशुतयार्थ॥ गुनपादाय॥ पूजातंकल्प॥ सहास्रधा॥ आकषिने॥ धूप॥
गुनमहुलदने॥ विसर्ग॥ उद्यागा॥ चलंदानकाविमर्गनावीनपी॥ समाधि या
यवनेडा॥ कलसपूजाधनेडा॥ दूजकेलयायककीनकिनिनेलत्वत्यहयाडा॥
कावय्यस्वहिकसखाने॥ गुनमहुलदानक॥ मगापूजायाक॥ विसर्जन॥ नि

लीकन ॥ मगारु ॥ गावा ॥ वड ॥ सगनै त्वाय ॥ लूलडा क्काय ॥ नार्ग सात घाय ॥ न
किं चलेन दानके ॥ किं ग्वगिने ॥ नडुली विसरुन ॥ ददिना ॥ दमापन ॥ हा ददि
ना ॥ अति कीद ॥ सगी का काय ॥ कलस का काय ॥ सिद्ध स्वाविय ॥ नरु न नथिय
के ॥ धिवा नथिय के ॥ अमय मन के ॥ पक्षान्त गजकन के ॥ गुलाइ न किं नायी
पाय पलजी वड गुलाय के ॥ ॥ वहीन सहा या सहा लकी या गहाय ला रया
के ॥ ॥ ॐ गिद सहा या विधि सहा फ गुरी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लीन वा ॥ या नै यी पुमि नागि ॥ ॥ कत्य कत्य सहा त्य वी ॥ नदनु द वग सव ॥ ॥

[illegible]

ज्यायमान ॥ बह्वन्तु ध्रुवगतवर् ॥ इअहअया दवगाइ कास्यन ॥ किं धूमिनिउलवा
यव ॥ एधिवीतकलवायन चलतपुनल ॥ एधिवि आपमंड वायु आकातप
कहलवन्दु ह्यय वगं दवगापनिहन वकायायमान ॥ कावत्त वृत्तिगा देवा
न ॥ ग्ववेलगा विज्यायमान धालता ॥ वन्दु ह्यय गावागनन दप्रगनन ॥ तमं वृत्
ताडावातयाकाडा विज्यागा ॥ आलागं लि बक्रयमान ॥ यावत्तं गानादिगव ॥ तमू
एधिवीतहि लाअकगलेयि वक्रयाडा विज्यायमान ॥ वन्दु किं गगनं यावत् ॥ व
न्दु माप्रहगि ॥ ह्यय ग्वकोनि देवगा आकातचवगि ॥ यव यव तात्ताहीग याकावि

आगतं ॥ धि नरु य मा ल ॥ तं ता वे रु डा रु डा या दे व ग प र्वा त या दा डा ॥ वह ल न
न लं ॥ धि नरु या डा वि ड्या य मा ल ॥ ना व र वि रु य र व रु ॥ ध्व त्ता ना लि न रु या डा
वि ड्या य मा ल ॥ धी न रु व ३ ॥ ॥ गि लि न हा ले उ वा के ॥ ॥ ॥





ॐ नमः॥ आमाहा वैवाचनवज्रसत्वाय॥ ॐ नमः॥ आ॥ अमाचपाऽपला
कंश्चवाय॥ ॥ अरुनिवर्तुया विधिमाह॥ ॥ कथासर्जनाथं॥
कलहावन॥ पर्वविधानं॥ हूर्याघयाय॥ ॥ अमाचपासलाय॥
वपगिवाहालपामिमागय॥ ॥ पूजाकापक॥ इवगवस्तुनीमिय॥ पच
गवस्तुधनयाय॥ ॥ सिष्यपनिहक॥ पूजारात॥ सगन॥ नगाम
नाकिहयमात॥ ॥ क्रियाविद्वियादाहय॥ गुनमधुत॥ लंघवलिबिह
ऊन॥ ॥ सिंधुवगयक॥ धर्तदानक॥ दगुलिसमादि याय॥ ॥

ध्यातिः कलभः सगनः गलतः माहाकावः एभमायाः बालकमात्रिः वै
अननपूजायाय ॥ ॥ ध्यातिनः पूजा ॥ दंडा पूजा ॥ नृमाद्यपाभ
लोचः धनपूजा ॥ ॥ धनैतिः शिष्यपतिकर्माकर्थं ध्याय ॥ धननदान
क ॥ पदः स्वयविय ॥ ॥ तैखतैखननायायक ॥ पूजाराधियकवाक
थ ॥ ॐ नृश्यादिः उत्तमाननृमूकस्य आर्क्षरुतसंप्राप्तिकर्मकाः
मनार्थ ॥ आमल्यः ३ नृमाद्यपाभलोचः धनपूजा गलतः एभमायाः ४ शुक्र
हमिबननृमूकनिमित्तार्थः ४ ॐ देवपूषा तु संवत्सयामिह ॥ धनाद

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ कौंकावसुवन्नाथं ॥ कवूक्षग्निग्धमानसं ॥ ॐ
भाद्यपाग्ननामाना ॥ लोकनाथं नमामिह ॥ ॥ थनासिष्यपनिगुवूम
उसविस्तर्जनयाचकं ॥ ॥ थयातिहमिसाधनयाय ॥ ॐ शुर्वेलंक
॥ हमित्तलाहगिनयियाडागय ॥ थयातिमहुलथाय ॥ वाक् ॥ ॐ सर्व
नाथागगास्तर्क ॥ सर्वनाथागगातर्य ॥ सर्वधर्मगनोवाङ्म ॥ दग्गमहुल
मूकम ॥ ॥ वूक्षमहुलयानचासदाहिलखानदृष्टालगय ॥ महुलस
दवेगा ॐ वाधनायाय ॥ वाक् ॥ ॐ सर्ववूक्षसपविवावसहिग ॥ आगद्याग

ॐ ऊँ वं हा नमः शुभं नमः ॥ कुरु १ ऊँ रुद्र स्वाहा ॥ मधुलसदं वी देव्या
कालाया ॥ ॥ यनाभिष्यापानिष्ट हागकाकलपकंगय ॥ ऊँ अपूर्ति
थकायाखडापुर्तिव्याव ॥ गुन्याकप्रार्थनायाय ॥ समन्वाहनेगुमावृद्ध
अस्थिषादि कूसिंह ॥ वज्रसत्त्वहमावाय्यदेवगाकव्ययाम्यह ॥
गुन्याकप्रार्थनायायक ॥ हनाथहगुन्याकनकलसी ॥ हगगहमननायादा ॥
हलपातस्य ॥ ऊँ नयादापापसमस्तमावकमालेधक ॥ गुन्याकप्रार्थनाया
ग ॥ यथधकालपाडाआकासस्थाने ॥ हलध

ॐ कृष्णमधुसूतगतावकस्य पादार्घ्यप्रतिष्ठा स्थापना ॥ ॥ यथास्नानवायकं
॥ ॐ नमो यैवेनायेनायस्वाहाग्यादि ॥ पञ्चपञ्चावपूजा ॥ ओवाद्याय ॥ लु
गि ॥ ॐ वृद्धपीलोकनार्थग्यादि ॥ ॥ यथादग्गनाखकने ॥ तिष्यनगु
कृयाकं प्रार्थनायाम् ॥ दनाथहगुगुननरुलसीथनियदिननिह्यं आनक
यादाडा ॥ सम्यक् वाचिहानसदृहामडागाले ॥ दलपालयाकं सवनया
य ॥ दलपालरुयिडागथिदकध्वतसा ॥ समस्ततिह्यविज्याकक ॥ स
मस्तखवावकायाकक ॥ समस्तखयनासयाकक ॥ माहापूरव ॥ सना

नैरुदयायमडिडा ॥ हुनैरुलतांग्वक्तुडाउपमामद्वक्तु ॥ धर्मसवित्रपै
न्यायोसागव ॥ थयिंक्तुवृद्धरगवानयाकैसत्रनयाचकै ॥ प्रतन्तैरुयमा
लधकै ॥ गुनूयाकै ॥ नापयार्ग ॥ ॥ थय्यालिमहुलसकिवतषह
यकै नय ॥ ॥ ॥ प्रिष्वरगवनसंम्यक् वैवादि ॥ विशाचवनसंपन्नसुगणा
लोक ॥ विदुनूत्रपूषादम्यसावथी ॥ सात्तादेवानाकूमनूष्यानाकूवृद्धाणा
गवान् ॥ नस्मैवृद्धवत्ताय ॥ दंपरुमहुलनिर्यागयामि ॥ ॥ थनवलिविया ॥
ॐ नमोवृद्धाय महाकायैविकाय ॥ रविस्तुगतावदुदयाय ॥ पत्रमात्मसम ॥

नागगविनायः ४ प्रधुक्कनरुमायः ४ सत्त्वार्थमहादूखकायूनः ४ ॐ देवतिः ४
दिव्यगंत्वासायनः ४ मूपरुङ्गमोसर्वसत्त्वाः ४ श्वानुगुत्रायसंन्यक्ती वाओप्रणि
स्त्वापनायः ४ ॐ भ्राह्मणवज्रगुण्यदात्वाहा ॥ ॥ ॐ गिबूद्धमहुत्तप
का ॥ ॥ ययातिधर्ममहुत्तयित्यगय ॥ धर्ममहुत्तत्रावाधना ॥ वाक्का ॥
धर्मसपाविवावसदिगभ्रागद्वागदुङ्गवेंदाः ४ अग्रमहुत्तत्राधिष्ठानेकत्र
रुङ्गुरुत्वाहा ॥ ॥ धर्ममहुत्तथायवाक्का ॥ सानधर्मगतैरुङ्गः ४ ज्ञानवर्य
विश्वधिवै ॥ सप्तनरुद्रकायार्गः ४ तारवमहुत्तनरुद्रम ॥ ॥ पाताद्य ॥ ॐ धर्म

मधुलेखनकायपाठार्चनम् ॥

॥ स्नानवाचा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ताय स्वादाय्यादि ५ ॥

॥ पञ्चपत्रात्रपूजा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ सुनि ॥ या

सर्वज्ञायान्यादि ५ ॥

॥ यनारकाका ॥ कायक निविधं पापं ४ वाचिः

गनु विधमानं ४ प्रिवकीर्तयदम्भकम् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कायसूत्रेन

या नापापश्चक्षुःक्षलता ॥ कीलप्रातिस्थापनम् ॥ कामसूत्रेन

न ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मवया जीवकायमगं ॥ मवया वस्तुकली

कायसूत्रेन या नापापश्चक्षुःक्षलता ॥ रुसप

क्यायमगंडा॥ सियागुवकुमसियाधायमगंडा॥ मवयागंडायावाया
यादाडात्याकमगंडा॥ मवयागव्यायमगंडा॥ थुलिववनैयादापाप॥
हनेमननैयादापापदृद्धकतसा॥ पवनिउगमनयायमगंडा॥ मव
यागकाकेववनक्यायमगंडा॥ अयापात्रयायमगंडा॥ थुलिनननैयादा
पाप॥ थुलिनदभकभलपापनालगाडा॥ पवनभभवथा३भमाचपाभला॥
कभवयाभूरनीवगदाने॥ ॥थनीलिकेयलखहायके॥ धम्मके
सान्नागप्रवेदिनभभलाउपायिकेपावनिवनिर्केगलेधम्मत्रलाय००

दे प्रव्यनतुलनिर्योग्यामि॥

॥ ध्याति वलिविया ॐ प्रह्लापावनिम

महापीकमहाश्वाकमहानितनलपंकडाप्रव्यदुर्लभ ॐ देवतिपक्षानुग
दुर्जग्रथः पित्रप्रह्लाववर्धनीः कातरमेधावर्धनीः धिनिप्रवृद्धिवर्धनी
यस्मात्॥

॥ ॐ गिधर्ममनुसपुजा ॥

॥ ध्यातिहंघमनु

लथियकंगय॥ वाक्॥ सर्वलक्ष्मसंपूर्णः सर्वलक्ष्मनवर्जितः॥ समन
रादवावायुं॥ राखमनुसन्तुर्गम॥

॥ मनुसयादयुसदादाखानद

हानयः देवगात्रावाहनयाया॥ वाक्॥ ॐ नमः ॥ अहंघसपतिवायसहितः

[illegible]

ॐ ॥ सगिहं धे ॥ अनागमिदुलप्रणिपन्नसगिहं धे ॥ अहंगारुलप्रणिप
न्नगम ॥ यथाहगवान् आर्यावलाकिगं न ह्य ॥ आर्यावलाकिलमी आ
वाहनियप्रवाहनिय ॥ समाकननिय अंजलिकननिय ॥ अनूक्तनपूनीय
अप्रदभनीय ॥ गहमेहं घमहुलसपयिवावान् ॥ संचयलाय ॐ देवपू
ष्यमहुलनिर्यागयामि ॥ ॥ यनवतिविय ॥ उं नमात्ता केनाथाय ४ दे
वास्तननवसंप्राप्तनकवाय ॥ अश्वपवाजकसवाच्चननविशाल्यवाय ॥
महाकायनिकाय ॥ ॐ देवतिपक्कमनगादिसदिग ॥ गृह्णते सर्वसत्त्वा

नीं॥ नवकादिदूःशाफात्रनाय॥ उद्धतरसमूधत्रवद्धसत्यन॥ ध
र्मसत्यन॥ संघसत्यन॥ सत्यवादिसत्यन॥ ॐ नमो॥ ह्रीं॥ ह्र॥ स्वाहा॥
॥ ॐ॥ निसिंघमकुलपूजा॥ ॥ ध्यायति॥ नमो॥ घपासमकु
लधिष्यगया॥ वाक्॥ सर्वसत्त्वादिगालिर्न॥ हर्षप्रकिर्तिनिर्मल॥ सम
नरद्ववाचार्य॥ मनीमकुलमूर्त्तन॥ ॥ नमो॥ घपासमवाहनकार्त्त
लस्यान॥ ह्रीं॥ लमकुलसंगया॥ वाक्॥ ॐ नमो॥ नमो॥ घपासमलोकेष्वत्र॥ सप
विवावसदिग्न आगच्छागच्छ॥ ऊर्ह्वैर्ह्रीं॥ नमो॥ लमकुलमूर्त्तन॥ ह्रीं॥ कुरु॥ कुरु॥

रुद्रस्वाहा॥ ॥ पागा घी॥ ॐ नमो भूमा घवा भू लोका स्वयं रत्ना न को
य पागा घी प्रमिद स्वाहा॥ ॥ खान को ल पाया॥ ॐ भूमा घवा भू लोका स्वयं
य स्वाहा॥ द धुस॥ ॥ ॐ कौं प्रे लोका द प्य नाय स्वाहा॥ द धुस॥ ॥ ॐ मधी
पक्ष हं॥ पि धुद हडा ना॥ ॥ ॐ भूमा घां कू भू य स्वाहा॥ इ अत॥ ॥
ॐ ना नाये स्वाहा॥ खडा त॥ ॥ ॐ हव कू मि ना नाये स्वाहा॥ इ अ कू न त॥ ॥
ॐ ह्रधन कू ना नाय स्वाहा॥ खडा कू न त॥ ॥ ॐ आर्या वती कि नं स्व नाय स्वा
हा॥ खडा पि धु कू न त॥ ॥ ॐ ही ख स प्य नाय स्वाहा॥ इ अ पि धु कू न त॥ ॥

ॐ रुयग्रीवाय स्वाहा ॥ दधुर्मा ॥ ॥ पंचमपदानपूजा ॥ धोवाद्याय ॥ ॥
सुमि ॥ लोकनार्थजगत्सर्व ४ सर्वस्मादिष्टुनश्चरं ॥ गमवत्सवनेदव ४
यादिनां प्रिदश्च श्वरं ॥ कौकारसमूहनाथ ४ कनूनास्मिधमोनर्त ॥ अमा
घपासनामानी ४ लोकनार्थनमामिहं ॥ साकश्चरं सिलसार्क ४ अमाघ
गुनसागव ॥ नमामि अमाघपातमोवि ४ नमस्तु लोकनार्थनमामि ॥ ॥
थनादहनारवाकाना ॥ हनाथहगुने कर्पति समन्वाहनेनयादाडादूका ४
स्यविज्यायमान ॥ हिगुदिगात्सोकधगुहकस्यग्वतमूनाडा ४ वूहृरगर्व

[illegible]

पञ्चरुद्ररहाहाहीही हूं हूं ॐ कावचवक्त्रवाह ॥ ध्वजशक्तिविभूषण
 नमः शक्तिरूपेण पवित्रमणिमणिमणि ॥ कलशरत्नगवतसामादित्यं क
 मवक्त्ररूपेण च नदरूपेण मणिगणैश्च व्यापितं अर्घ्यं च वन्दय को
 हा ॥ ॥ हुनैकाकाख्यान ११ अक्षरगव ११ धुमिका न के नया ३४ वाकाखा
 नैव ३४ ३४ अक्षरगव ३४ ३४ मञ्जुलसर्कागिन के ॥ वा ॥ ॐ नमो वत्त
 प्रयाय ॥ नमः ३४ आर्यावत्ताकि गणेशनाय ४ वीक्षितत्वाय महामत्वाय
 महाकायनिकाय ॥ गद्यथा ॥ ॐ नमो घणित महामणित शुद्धतत्वे ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ च नमस्तस्मात्वासीति गच्छन्वा य उं नमो
हं हृदं ह्याहा ॥ अस्त ११ पालपं कृत ॥ ॥ ध्यायाति वलि विद्या ॥ वा ॥ उं
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
य ॥ सकल योग दायिद्रुदुष्ट खगोलनाय ॥ द्रुष्टुं प्रदुष्टुं खगोलनाय ॥ ॥ ॥ देव
सिद्धिं ध्याति स हि न गृहीतं पश्यत्यस्य सानिद्रुदुष्टं ॥ ॥ अस्त ११ पालपं कृत ॥ ॥
॥ ध्यायाति कुरुमानया कस्यानकाया ॥ ॥ देवपूजा रीति याय ॥ ॥ धनानाम
स्तुति पूजा ॥ दत्तवलि पूजा ॥ उरूपूजा ॥ धर्तृदानकं ॥ सुनिमातकं

याय किं गति न के ॥ देवदक्षिना ॥ सगनगय ॥ हृदयिना ॥ निस्रताकाय ॥
॥ वकालअज्ञाय ॥ ह्यानकाकाय ॥ वीय ॥ अस्तिर्वदविय ॥ ॥ ॐ गि ॥
उक्तास्मीवगधर्मविधिस्तमाफुहं ॥ ॥ ॥ पालनयाय ॥
सागिष्वर्नविदंयाय ॥ मर्गताथंक्रियाधूनका ॥ उक्तमानसकल्यं धल
नदानकेउत्तमधुलकक ॥ ॥ यनरवकन ॥ कावगतिवक्धर्मस
कनं अहावाप्रमक ॥ हनाथहंउत्तमवगवलीन ॥ जीवववयकया
अवीना ॥ यलीनंथुगधर्मवगधललप ॥ मेरुगसाथुगलिधर्मवग ॥

अक्षयप्रदिग्धकधलतपधकंधार्थनायादा ॥ ॥ प्रानदैन्यावधप
विष्णुगच्छिगिष्णुकायः ॥ मवकर्मकर्म ॥ नानाधर्मश्चत्सदेवक
मवम् ॥ दक्षिणपनिदुर्नदद केवलप्राप्तिजनः ॥ किवाउनुह्यायति
यमगडा ॥ थडागगिमद ॥ थगगालगाडा ॥ नानाधर्मसातुदकर्म ॥
॥ ॥ नृखावाक्यनद्वेपत्रर्व ॥ पत्ररायामनसापिनदिग्ध ॥ दक्षिण
पूतवीदखकनदद ॥ निश्चयनकिनकर्म ॥ नृसधिरवकायमगडा ॥ म
वयाधनसाहयायमगडा ॥ दूर्नपत्रर्वविग्रहयायमगडा ॥ थगगालगा

अनानाधर्मसाम्ब ननमात् ॥ ॥ गृहवत्तपत्त ॥ ॐ मि ॥ हसिष्यथ
न नृक्षमिब्रुगउपाशकचर्या ॥ नृहावाप्रदिधललपायापून्यन ॥ गथ
धलता ॥ कमाडानकुरय ॥ दयाडानकुरियिडा ॥ नृक्षमीब्रुगया नृनृगाव
न ॥ निश्चयनलवर्जउभानिडा ॥ नृथं हसिष्यदपानिसकलं वाकाकुरया
डा ॥ मीकनार्गलानाडा ॥ नृनृगवाज्ञानलाकाडा ॥ नृथिंकेपवमश्चन
था ॥ नृमाघपाशलाकश्चनलदृष्टिकुरयाडा ॥ सकलसिष्ययागात
दासर्वकारवकायायिरुला ॥ ॥ नृदानकालेलादृष्टिनाल्लमि

१२ ददिना॥

॥ इति श्रीश्रद्धाजीवगविधिहमाफशुर्हं॥

॥

पचगवयाध्यान॥ स्वमूर्धं स्वमयश्चिन्तय दधिदूधसपि कृष्णधननिधि

वपचगवयश्च पविर्गुं कायश्च धनं॥

॥

॥

॥

कलारथात्तात्या॥ वीनावंतामथारुमा ३ पनवाव्यजनाध्वजा॥ पनदाका

मिकायद्रा ४ विगानश्च पगाकिका॥ नृणा हस्तिनाशृगना ४ क्रोधा वीरव

रथानका॥ कनूत्तसत्यसन्माना ४ शूरगधर्मदसय॥ ॥ तिरिवी

मशूरवजमहाविहारीयथी ३ माहावेवाचनस्यजक॥ वजावाय्यमाहावीन

या वीयागुलिदोहथस्तकमायायमालशुर्हं॥

॥

॥

॥







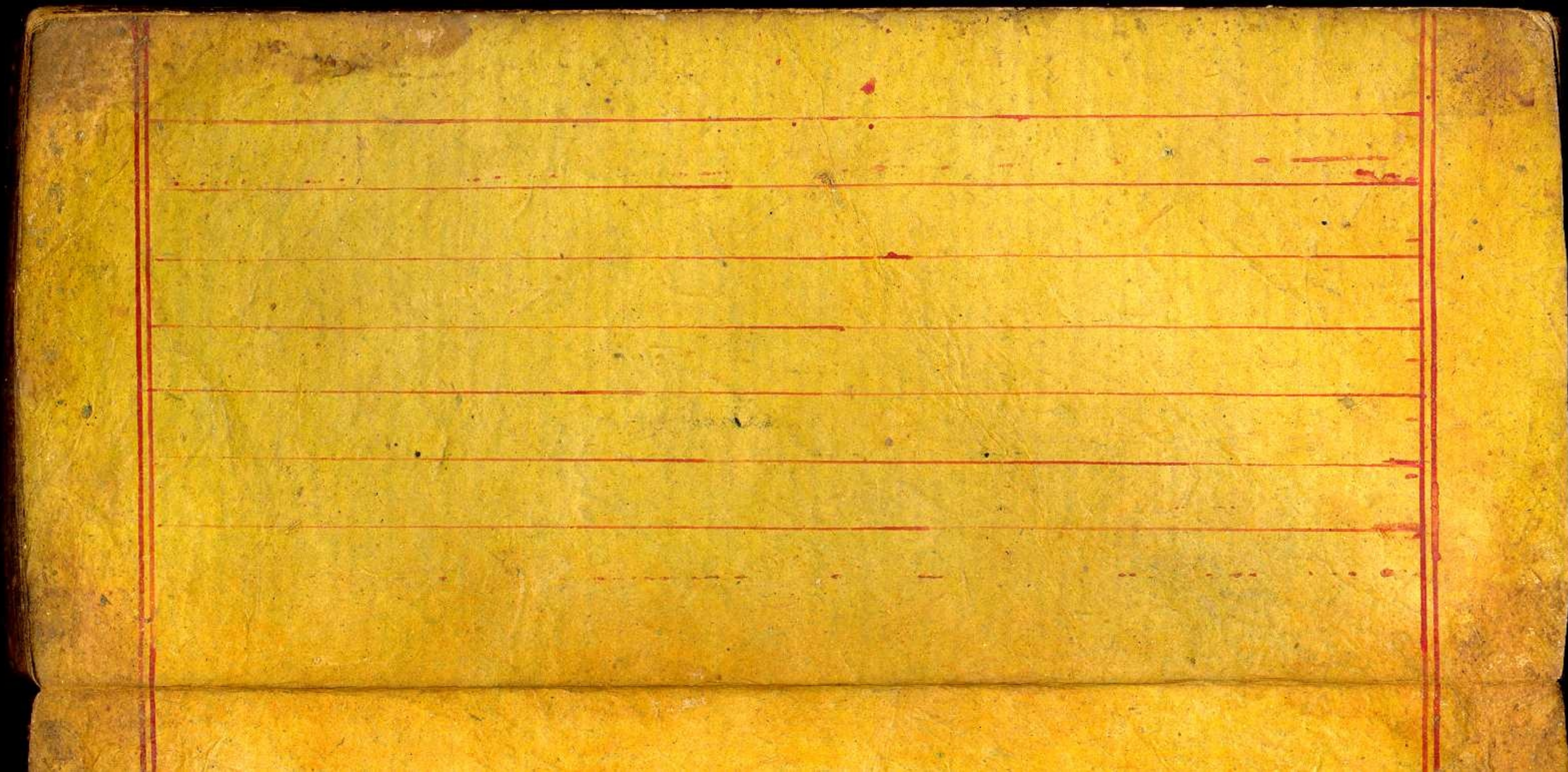














卷之六

118 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

